www.ghoonghatkibagawat.com E-mail : ghoonghatkibagawat@gmail. Com Facebook: ghoonghatkibagawat

GKB

RNI NO : UPHIN/1999/01282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 19 | अंक : 46 | गोरखपुर | 7 जून 2020 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2

महासागर दिवस का बढ़ता महत्व

8 जून को बनाए जाने वाले विश्व महासागर दिवस कि अपनी बहुत अधिक महत्वता रही है। एक ओर जहां हम अपनी गलतियों को समझ अपने द्वारा प्रदूषण को रोकने का प्रयास कर रहे हैं। ताकि पर्यावरण को होने वाले नुकसान से बचाया जा सके वही दूसरी ओर पर्यावरण का महासागर से बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। बिना महासागर पर्यावरण संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जलवायु और मौसम प्रणाली को संचलित करने में प्रशांत, अटलांटिक, भारतीय, आर्कटिक और दक्षिणी महासागर हैं। यही कार्बन उत्सर्जन को अवशोषित करके जलवायु परिवर्तन के, प्रतिरोध के रूप में भी कार्य करते हैं। महासागर पृथ्वी का जीवन है। यह पृथ्वी के लिए फेफड़ों के समान कार्य करते हैं। यहीं से सम्पूर्ण पृथ्वी को ऑक्सीजन प्राप्त होती है। महासागर दिवस का मुख्य कारण लोगों को महासागरों के प्रति जागरूक करना है। हम सभी जानते हैं कि हमें समुद्र से ही बड़ी मात्रा में भोजन और दवाएं प्राप्त होती है। किन्तु प्लास्टिक से महासागर प्रदूषित हो रहें हैं और साथ ही महासागर में रहने वाले जीव प्लास्टिक को अपना भोजन समझ खा लेते हैं। जिसके चलते उन्हें अपने जीवन से हाथ धोना पड़ता है। जिसके कारण हम कई आवश्यक प्रजातियों को नुक्सान पहुंचा रहे हैं। इस लिए हमें महासागरों की सुरक्षा करने की आवश्यकता है। पूरे ब्रह्माण्ड में केवल पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहां पर जीवन संभव है। जिसका मुख्य कारण यह है कि पृथ्वी पर महासागर है। महासागर के होने के कारण पृथ्वी का तापमान काबू में है। यदि पृथ्वी पर महासागर नहीं होते तो पृथ्वी का तापमान इतना अधिक हो जाता कि यहां पर जीवन का होना असम्भव हो जाता। महासागर के जल की लवणता और विशिष्ट ऊष्माधारिता का गुण पृथ्वी के मौसम को प्रभावित करता है। मौसम के संतुलन में महासागर जल की लवणता जीवन के लिये एक वरदान है। यह अपने अंदर सुर्य की उर्जा का एक बहुत बड़ा हिस्सा समा लेती है। जिसके चलते पृथ्वी का तापमान जीवन योग्य बना रहता है।

पृथ्वी का बढ़ता तापमान और महासागर में बढ़ता बढ़ता प्रदूषण हमारे लिए खतरे की निशानी है। महासागर बहुत अधिक मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड को अपने अंदर शोषित करते हैं। जिसके चलते पृथ्वी में संतुलन बना रहता है। किन्तु यदि इसी प्रकार से महासागरों में प्रदूषण बढ़ता रहा तो उनके द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड को शोषित करने में परेशानी आएगी और वह पृथ्वी का तापमान बढ़ जाएगा।

महासागरों में सबसे अधिक प्रदूषण उसके तटीय क्षेत्रों में देखने को मिलता है। यह मानवीय गतिविधियों के कारण हो रहा है। महासागर जल में भारी मात्रा में प्रदूषणकारी तत्वों के मिलने से इन स्थानों पर जीवन संकट में है। बहुत से तटीय क्षेत्रों के आस पास पाई जाने वाली प्रजातियों का जीवन असुरक्षित होता जा रहा है। महासागर में चलने वाले तेल वाहक जहाजों से जब महासागरों में तेल का रिसाव होता है। तब महासागर में एक मटमैली सतह बन जाती है। जिसके चलते सूर्य का प्रकाश महासागर की गहराई तक नहीं पहुंच पाता है और वह जीवन को पनपने में परेशानी होती है। जिसके चलते उस स्थान पर जीवन खत्म हो जाता है। ऐसे स्थानों पर जैव विविधता भी प्रभावित होती है। पूरी दुनिया को प्रभावित करने वाले कोविड–19 ने महासागर को भी प्रभावित किया और सालों से प्रदूषण का शिकार होने वाले हमारे महासागरों में प्रदूषण की कमी हुई जिसके चलते महासागर में रहने वाले जीवों को जीवन दान की प्राप्ति हुई और हमें यह सोचने का अवसर प्राप्त हुआ। कि हम किस प्रकार से अपने द्वारा पर्यावरण को सुरक्षित रखने के उपाय कर सकते हैं। हमें जरूरत है ऐसे फैसले लेने की जिस पर चल कर हम अपनी पृथ्वी को बचा सकें। महासागरों के लिए सबसे बड़ी परेशानी बन चुका प्लास्टिक कचरे पर हमें रोक लगाने की आवश्यकता ही नहीं है। साथ ही कठोरता से उस कानून का पालन करने की जरूरत है। यदि आप महासागर के पास नहीं रहते हैं या फिर एक आम व्यक्ति हैं, यह सोच अपनी जिम्मेदारियों से बच नहीं सकते हैं। हमें सरकार के फैसले लेने का इंतेजार नहीं करना चाहिए। हमें अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। अधिक से अधिक कोशिश करें ऐसी वस्तुओं का प्रयोग करें जिससे पर्यावरण को नुक्सान ना पहुंचे। कपड़े और अखबारों से बनें थैलों का प्रयोग करें। जहां तक हो सके प्लास्टिक बैग और प्लास्टिक से बनी वस्तुएं प्रयोग ना करें। किसी अन्य के लिए नहीं स्वयं के लिए विचार करें। जीवन अनमोल है उसे अपने लालच और स्वार्थ की भेंट ना चढ़ाएं। प्रदूषण को रोकने में अपना सहयोग दे। स्वस्थ और खुशहाल जीवन जिएं।

राखी सरोज

पर्यावरण

एक दिन मात्र दिखावे का स्नेह
मत पर्यावर पे तुम लुटाओ
नित्य करो हिफाजत तुम इसकी
प्रतिदिन तुम पर्यावरण बचाओ
पेड़ो से मिले सदा प्राणवायु,
तो आओ मिलके इन्हे बचाए
हरेभरे ये सारे लगते बड़े ये प्यारे
फिर भी इनके हो
रहे रहा देखो वारे न्यारे
आओ सभी मिलजुल इन्हे बचाए
निर्मल जल नदियां ये लाती हैं
धरा की सदा हरा भरा बनाती हैं
पावन पवित्र नदियों में तुम
अपशिष्ट कचरा ना बहाओ
नदियों से धरती की हरियाली
सभी मिलजुल के इन्हे बचाओ
मधुर धुन में जब ये पंछी गाते हैं
मन मस्तिष में आंनद है भरता
हम सभी प्रसन्नता से भर जाते हैं
हरी शाक और सब्जी हम सब
इस धरती मां से ही तो पाते हैं
मां की कोख से हम बाहर आते
ताउम्र फिर धरती पे ही तो बिताते हैं
सारी आश्यकताएं हम सब अपने
पर्यावररण से पूरी करवाते हैं
निश्वार्थ रूप से सेवा सभी हमारी
यह। पर्यावरण सदा पूरी करता है
फिर भी मूर्ख मानव न जाने क्यों
पर्यावरण का क्षरण करता है
अब अज्ञानतावश में जीवन
अपना नरक नहीं बनाएंगे
पर्यावरण से ही जीवन सम्भव है
बात ये जन जन को समझाएंगे
मिलजुल के हम सभी आज से
प्रतिदिन पर्यावरण को बचाएंगे
आओ मिलकर इस संदेश को
सभी जन जन तक पहुंचाओ
एक दिन मात्र दिखावे का स्नेह
मत तुम पर्यावरण पे लुटाओ
नित्य करो हिफाजत तुम इसकी
प्रतिदिन तुम पर्यावरण बजाओ

नीरज कुमार सिंह
देवरिया पी

"इंडिया के असली स्टार" कुंदन ,सुनीता ,पल्लवी ,रश्मि ने लहराया परचम

पटना। इवेंट के क्षेत्र में अग्रणी नरुलाज एंड कम्पनी देशभर में नायाब प्रतिभाओं को निखारने और उनके स्वर्णिम सपनों को साकार करने के लिये "इंडिया के असली स्टार" कान्टेस्ट का आयोजन किया, जिसमें अलग–अलग वर्ग में कुंदन श्रीवास्तव , सुनीता गुप्ता ,पल्लवी और रश्मि ने बाजी अपने नाम कर ली।

"इंडिया के असली स्टार" कान्टेस्ट का ग्रांड फिनाले का रिजल्ट सात जून को घोषित हुआ। प्रतिभागियों को गायन, खाना पकाने, मिमिक्री, नृत्य, अभिनय आदि शामिल थे। घर बैठे अपनी प्रतिभा को दिखाने का मौका दिया गया।

प्रतिभागियों को लगभग तीन मिनट के वीडियो बनाकर व्हाटसप पर भेजने थे। 13 मई से आयोजन शुरू किया गया था।अप्लाई करने की अंतिम तिथि 29 मई को थी।

1200 से अधिक पार्टिसिपेंट्स ने इस आयोजन में हिस्सा लिया ,जिसमें अभिनय के क्षेत्र में बिहार के मुजफ्फरपुर के कुंदन श्रीवास्तव (विनर), यू.पी की नोयेडा की जानवी सिंह(फर्स्ट रनर अप रनरअप), पटना के अभिषेक सिंह (सेकेंड रनरअप) बनें। इसी तरह कुकिंग के क्षेत्र में पटना की सुनीता गुप्ता (विनर), रुचि श्रीवास्तव (फर्स्ट रनरअप), निमरा सददफ (सेकेंड रनरअप) के खिताब से नवाजी गयीं।नृत्य के क्षेत्र में बेंगलुरू की पल्लवी (विनर), पटना के इंद्रजीत कुमार गोयल(फर्स्ट रनरअप), महाराष्ट्र के नागपुर की अपूर्वा झा (सेकेंड रनरअप) ने बाजी अपने नाम की। गायन के क्षेत्र में दिल्ली की रश्मि सिंह (विनर), नोएडा के श्याम कुमार (फर्स्ट रनरअप), बिहार के सहरसा के शंकर बिहारी (सेकेंडरनरअप) रहे।

जज पैनल में फिल्म स्टार, सिंगर्स, डांसर्स और जाने माने लोग शामिल हैं। इनमें नवीन मदान(सिंगर), शिवास दादू (फिल्म डायरेक्टर), मेजर विकास सिंह (सी. एम.डी.–फॉरचूनो ग्रुप), सुनील कुमार सिंह (फाउंडर–जेनिथ कॉमर्स अकेडमी), आकांशा चित्रांश (फाउंडर– संस्कृति फाउंडेशन), आकाश कुमार पांडेय (डायरेक्टर –इवेंट हब), आरोही श्रीवास्तव (सुपर मॉडल इंटरनेशनल इंडिया), मनीष शर्मा (मॉडल), समीर शेखर (फाउंडर–निरवाना रेस्टुरेंट), कुमार शानू (फैशन मॉडल) प्रमुख हैं।

नरुलाज एंड कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टर सुश्री शिखा नरूला ने बताया कि देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। बस एक उचित प्लेटफॉर्म नहीं मिल पाने की वजह से कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। "इंडिया के असली स्टार" के जरिये हर क्षेत्र के कलाकारों को एक बेहतर प्लेटफार्म मिला है। उन्होंने बताया कि कान्टेस्ट में प्रथम आने वाले प्रतिभागी को एंड्रॉइड मोबाइल दिया जायेगा। इसी तरह दूसरे नंबर पर आने वाले प्रतिभागी को ब्रांडेड वाच और तीसरे नंबर के प्रतिभागी को ब्रांडेड सनग्लास, बम्पर प्राइज इफोन उपहार के तौर पर दिये जायेंगे। बाकी सभी पार्टिसिपेंट्स को सर्टिफिकेट दिया जाएगा। इसके साथ हीं एक्टिंग के क्षेत्र में विनर्स को शार्ट फिल्म में काम करने का अवसर मिलेगा।

<u>सन्त कबीरदास की जयंती पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी'</u>

'मन के कोरे कागज पर ढाई आखर लिख लेना : रागिनी शर्मा'

नई दिल्ली। राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना, उज्जैन द्वारा संत कवि कबीर जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय कवयित्री रागिनीं स्वर्णकार शर्मा ने माँ सरस्वती की मधुर व सुंदर वन्दना से किया। रागिनी शर्मा ने कहा मीरा और कबीरा की बातें चित में रख लेना,मन के कोरे कागज पर ढाई आखर लिख लेना।

कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा ने अपने व्याख्यान में कहा कि कबीर प्रेम की पीर के विलक्षण कवि हैं। उन्होंने प्रेम तत्त्व को इस संसार के लिए परम आवश्यक माना है।प्रेम के व्यावहारिक और आध्यात्मिक मर्म को उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। वे स्वयं तो प्रेम रस में निमग्न थे ही, संसार को भी इस सरस मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। उनकी रचनाएं लोक ग्राह्य रूपकों के माध्यम से प्रेम पंथ की चुनौतियों और महिमा को व्यक्त करती हैं।

आज विश्व मानवता का उद्धार प्रेम की पीर के माध्यम से संभव है। शुष्क ज्ञान नहीं, प्रेम के माध्यम से संसार को बदला जा सकता है। सामाजिक विषमता, अलगाव और हिंसा का जवाब कबीर के प्रेम तत्त्व में है। राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ रचनाकार श्रीमती सुवर्णा जाधव, मुंबई ने की। उन्होंने कहा कि कबीर अहिंसा प्रेमी और मानवतावादी कवि थे। आज के संकटकालीन दौर में उनके सन्देशों की आवश्यकता बढ़ती जा रही ळें

संगोष्ठी में डॉक्टर शहाबुद्दीन नियाज, मोहम्मद शेख, अहमदनगर, डॉक्टर प्रभु चौधरी, वरिष्ठ कवि श्री राकेश छोकर, श्री जितेंद्र पांडे, नई दिल्ली आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। आयोजन में डॉ संजीव कुमारी, पानीपत, डॉ. शम्भू पंवार, पुनिता कुमारी,नई दिल्ली, डॉ सुशीला पाल, मुम्बई, डॉ विवेक मिश्र, कोटा, डॉ रूपाली चौधरी, डॉ स्नेहलता शर्मा, संजीव पाटिल, पुणे, कवयित्री श्रीमती दीपिका सुतोदिया, गुवाहाटी, महिमा जैन मुरैना, प्रभा बैरागी, उज्जैन, डॉ. बलिराम धापसे, औरंगाबाद, डॉ जितेंद्र पाटिल, संगमनेर, डॉ श्वेता पंड्या, पायल परदेशी, महू, डॉ सागर चौधरी, डॉ श्रीराम सौराष्ट्रीय, डॉ कविता सूर्यवंशी, तारा वाणिया, प्रियंका परस्ते आदि सहित देश के अनेक राज्यों के शिक्षाविद, साहित्यकार और अध्येताओं ने भाग लिया।प्रारंभ में आयोजन की रूप रेखा एवं स्वागत भाषण संस्था अध्यक्ष डॉक्टर प्रभु चौधरी ने प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी का मनमोहक व शानदार संचालन,प्रसिद्ध कवियत्री रागिनी स्वर्णकार शर्मा, इंदौर ने किया। आभार साहित्यकार सुंदर लाल जोशी, नागदा ने जताया।

जब तुम चिठ्ठी
लिखा करते थे
सच में
उलझन रहता था,
खामोशियो में
इंतजार
चिठ्ठी की
कई दिनों तक करता था,
हर रोज डाक पर हो आते थे
पूछ पता तेरे चिठ्ठी की
एक ठंडी आहे भरता था,
निगाह लगाये राहों पर
कि कब डाकिया आयेगा
देख डाकिये को अपने गली में
मन उमंग भरता था,
अपनी चिट्ठी ना होती
डाकिये के झोले में
मायूस मन लेकर
कल का इंतजार करता था।।

अभिषेक राज शर्मा
जौनपुर उत्तर प्रदेश

घूँघट की बगावत
डिजिटल प्रकाशन के सफलतापूर्वक दो वर्ष पूर्ण होने की ओर अग्रसर
गोरखपुर ही नहीं गोरखपुर से बाहर भी पढ़ा जाने वाला
गोरखपुर से प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार
www.ghoonghatkibagawat.com
E-mail : ghoonghatkibagawat@gmail. Com
Facebook: ghoonghatkibagawat
45, बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर।

वैचारिक संगरोध की आवश्यकता नहीं !

आप किसी राजनेता, अधिकारी के साथ किसी विशेष कार्यक्रम को करते हैं तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है? जब आपको समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर भगाने की चिंता होती है तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है।

मजदूरों का रोना रोना बंद कर दीजिये मजदूर घर पहुंच गया है उसके परिवार के पास मनरेगा का जाब कार्ड, राशन कार्ड होगा, सरकार मुफ्त में चावल व आटा दे रही है , जनधन खाते होंगे तो मुफ्त में पैसा भी दिया 2000 रु. , और यदि कुछ ना भी हुआ तो वो जहां रहेगा मेहनत करके खा जी लेगा पर उन तमाम मध्यम वर्गीय परिवा. रों का क्या होगा जो कहीं प्रवासी नहीं थे और आज घरों में बंद होकर रह गए । वो मध्यम वर्गीय समाज जिसने लोन में लाखों रुपये का कर्ज लेकर प्राइवेट कालेज से इंजीनियरिंग किया था और अभी कम्पनी में 5 से 8 हजार की नौकरी पाया था (मजदूरों से भी कम) लेकिन मजबूरीवश अमीरों की तरह रहता था । सोचिए लाक डॉउन में उसकी क्या स्थिति होगी । जिसने अभी अभी नयी–नयी वकालत शुरू किया था। दो–चार साल तक वैसे भी कोई क्लाइंट नहीं मिलता । दो–चार साल के बाद चार–पाँच हजार रुपये महीना मिलना शुरू होता है , लेकिन मजबूरीवश वो भी अपनी गरीबी का प्रदर्शन नहीं कर पाता और चार–छरू साल के बाद जब थोड़ा कमाई बढ़ती है, दस–पंद्रह हजार होती है तो भी लोन–वोन लेकर कार–वार खरीदने की मजबूरी आ जाती हैं , अब कार की किस्त भी तो भरना है.! उसके बारे में भी सोचिये जो सेल्समैन, एरिया मैनेजर का तमगा लिये घूमता था बंदा। भले ही आठ हजार रुपए महीना मिले लेकिन कभी अपनी गरीबी का प्रदर्शन नहीं किया ।उनके बारे में भी सोचिये जो बीमा ऐजेंट, सेल्स एजेंट बना मुस्कुराते हुए घूमता था। आप कार की एजेंसी पहुंचे नहीं कि कार के लोन दिलाने से ले कार की डिलिवरी दिलाने तक के लिये मुस्कुराते हुए साफ सुथरे कपड़े में आपके सामने हाजिर ,बदले में कोई कुछ हजार रुपये लेकिन अपनी गरीबी का रोना नहीं रोता है ,आत्मसम्मान के साथ रहता है।

मैने संघर्ष करते वकील, इंजीनियर, पत्रकार, ऐजेंट आदि देखे हैं। अंदर भले ही चीथड़े हो लेकिन अपनी गरीबी का प्रदर्शन नहीं करते हैं । इनके पास न तो मुफ्त में चावल पाने वाला राशन कार्ड है, न ही जनधन का खाता, यहाँ तक कि गैस की सब्सिडी भी छोड़ चुका हैं ! ऊपर से मोटर साइकिल की किस्त या कार की किस्त ब्याज सहित देना है ।बेटी–बेटा की एक माह की फीस बिना स्कूल भेजे ही इतना देना है जितने में दो लोगों का परिवार आराम से एक महीने खा सकता है । गरीबी का प्रदर्शन न करने की उसकी आदत ने उसे सरकारी स्कूल से लेकर सरकारी अस्पताल तक से दूर कर दिया है. ! ऐसे ही टाइपिस्ट, स्टोनो, रिसेप्सनिस्ट, प्राइवेट बस व टैक्सी चलाने वाले कर्मचारी आदि (चालक, परिचालक, खलासी, मालिक) भी इसी वर्ग में हैं, ये भी अपनी गरीबी का प्रदर्शन नहीं करते हैं। अब यक्ष प्रश्न है कि ऐसा वर्ग क्या करे ?

यहां सब मजदूर की त्रासदी का विषय पा कर उसमे तल्लीन होकर अपनी अपनी रोटियां सेंक रहे। मजदूरों की पीड़ा को कैमरे में कैद करके , व्यथा का नाम देकर ही अपनी नकली पीड़ा व्यक्त कर रहे है । आम जन से प्रशासन और सीधे सरकार से जनता तक एक दूसरे के संदेश पहुचांना सिर्फ और सिर्फ पत्रकार का काम है। और ऐसा नही की किसी संस्थान से जुड़ा व्यक्ति ही पत्रकार हो सकता है। ज्ञात हो कि हमारे देश और प्रदेश, जनपदों में बहुत से ऐसे कलमकार है जो स्वतंत्र पत्रकार के रूप में अपनी लेखनी के दम पर बहुत से मामलों में अपनी छाप छोड़ चुके है। वंही देखा जाए तो देश भर में लॉक डाउन होने के चलते अचानक सड़को पर प्रेस और अवैध ा प्रेस कार्ड धारकों की बाढ़ सी आ गई थी। जिसपर पुलिस प्रसाशन ने सतर्कता बरतते हुए। एक अभियान के तहत बहुत से ऐसे लोगो को सबक सिखाया है। जो अपने प्रेस कार्ड या अपने पत्रकार होने का गलत इस्तेमाल करते हुए लॉक डाउन का उलहंगन कर रहे थे। ऐसे लोगो पर कार्यवाही होना सही है। मगर पत्रकार को फर्जी शब्द से संबोधित करना ओछी मानसिकता का संदेश है। और उसे बार बार सिर्फ और सिर्फ फर्जी पत्रकार कहना चौथे स्तम्भ के लिये किसी चुनोती से कम नही। क्योंकि पत्रकार अवैध हो सकता है। मगर गलत बिल्कुल नही। और सबसे बड़ी लज्जा जब महसूस होती है। जब पढ़े लिखे अधिकारी और खुद पत्रकारिता जगत से जुड़े वरिष्ठ पत्रकार पत्रकारों की कमियों को उजागर करने के लिये उन्हें फर्जी शब्द से संबोधित करते हैं। जबकि वो शख्स सही नही, अवैध पत्रकार की श्रेणी में आते है। मेरा इस लेख के माध्यम से आप सभी से गुजारिश है कि अगर कंही भी किसी पत्रकार की कमी को उजागर किया जाए। या पत्रकार के लिये कुछ भी कंही बोला या लिखा जाए तो कृपया किसी सभ्य शब्द का इस्तेमाल करे। आप किसी राजनेता, अधिकारी के साथ किसी विशेष कार्यक्रम को करते हैं तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है? जब आपको समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर भगाने की चिंता होती है तब आपको एक पत्रकार की जरूरत पड़ती है। यकीनन इस संसार में बहुत कुछ मेरी और आपकी बुद्धि से भी परे है, जीव को ये मिथ्या भ्रम ही मैं ही सब कुछ नहीं जानता हूं ।सीखने और जानने या ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा सदा बनी रहती है, और बनी भी रहनी चाहिए । ज्ञान महज दि खावा या कहन कहन नहीं है। वह खंडन खंडन नहीं मंडन करना भी सीखो। देखो कोरोना वायरस फूक मरने से ही लाखों लोग की जान ले लेता। आज तक हमें पता नहीं था कि फूक या छींक मरने हाथ मिलाने से ही लाखों करोड़ों लोग बीमार या मर जाते है। खैर ये ज्ञान तर्क और चिंतन का विषय है। पर इस अखंड विश्व में बहुत कुछ अभी शेष है जिससे हमें सीखना है ।

पंकज कुमार मिश्रा

द्वंद

अंधेरा बिखरा हुआ है चारों और
एक अजीब सा
सन्नाटा लिए हुए।
फिर भी
क्षितिज के किसी कोने में
रोशनी का जो एक
द्वंद सा चमक रहा है,
वो प्रतीक है
तेरे मेरे अस्तित्व का।
फिर भी वो रोशनी का
है तो एक द्वंद ही न
इसीलिए आपस में लड़ता रहता है,
अपने अस्तित्व की
गहराई को मापने के लिए।
मगर मुझे जाना होगा तुमको
पहचानना होगा खुद को
इस द्वंद से बाहर निकलने के लिए।

राजीव डोगरा 'विमल'

शर्मसार मानवता को

गहरी पहुंची चोट है फिर से, एक बार मानवता को
फिर से कर डाला मानव ने , शर्मसार मानवता को
ज्यादती धरती पर हो गई, देख रहे क्यों नाथ नहीं ?
अनानास देने जो आए, कांपे क्यों वो हाथ नहीं ?
लाज–शर्म भी भूल गए थे, हया भी उनको न आई
दो जानों को खत्म कर दिया, दया भी उनको न आई
चंद पटाखों ने कर डाला तार–तार मानवता को
फिर से कर डाला मानव ने , शर्मसार मानवता को
सूखी शोक से नदियां सारी, कुंआ हो गया है प्यासा
पढे़&लिखों ने दे दी देखो जाहिलियत की परिभाषा
होता है विश्वास नहीं कि, हुआ है ऐसा भारत में
कुछ लोगों ने कर डाला कुकर्म ये कैसा भारत में
दिए हुए किसने आखिर ऐसे अधिकार मानवता को
फिर से कर डाला मानव ने , शर्मसार मानवता को
बोलता ये पूरा भारत है, इस घटना को सुन–सुनकर
दोषी चाहे जो भी हों वे टांगे जाएं चुन–चुनकर
कानूनों से और विधान से खंड कड़ा वे सब पाएं
अपनी इस करनी की खातिर दंड कड़ा वे सब पाएं
सख्ती से ही बचा सकेगी, सरकार मानवता को
फिर से कर डाला मानव ने , शर्मसार मानवता को

विक्रम कुमार, मनोरा, वैशाली

खतरा अभी टला नही है...

खतरा अभी टला नहीं है भाई,
बिल्कुल न बनना हमें मगरूर।
झट बन जाता है साक्षात काल,
कोरोना की प्रवृत्ति बहुत है क्रूर।।
सोशल डिस्टेंसिङ्ग सबसे ज्यादा,
अभी भी रखेगा हमको सुरक्षित।
भीड़ भाड़ से बचना ही भलाई,
जीवन यदि रखना हमें आरक्षित।।
अभी तलक दहशत के नाते ही,
घर में लोग दुबके यूँ ही रहे पड़े।
लॉक डाउन में मिलते कुछ छूट,
दुकानों पर हम न जा के भिड़े।।
जब तक न हो जाय पूर्ण निदान,
हमें अभी भी रहना है सावधान।
साफ सफाई सैनिटाइजर प्रयोग,
बचा सकती है हमारी पहचान।।
रिश्तेदारी का अभी नहीं समय,
बस! कुछ दिन हमें बिताना है।
महामारी का हो जाय विनाश,
तब खुल कर हमें मुस्काना है।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती ख्उत्तर प्रदेश,

प्रकृति प्यारी

बड़ होता बड़ा, पीपल देती शीतल छाया
नीम करता हवा शुद्ध आँवला औषधियुक्त।
बबूल दंत की औषधि वेर खजूर मधूर
तार का बुलंद हौसला छूती गगन ।।
आम, लीची, कटहल तो देते वृद्धि
देश विदेश सैर कर लाते है समृद्धि।।
औषधियों से भरा हरे भरे घनघोर वन
इनके छाल,पत्ते जड़ और फल संवारे तन।
इनसे सुरभित है जीवन हमारा
इनका सदा ख्याल रखना धर्म तुम्हारा।
इनके वजूद पर टिका हुआ है
मानव अस्तित्व तुम्हारा।
कंचन काया की है यह वरदान
पेड़ पौधे रहे भरे घनघोर समान।
मानव की दानवता से कटते वृक्ष
छोड़ो दानवता और लगाओ वृक्ष।
हिमखंड की पिघलने की रफ्तार
संकट के बादल प्रकृति का वार।
असमय वारिस बदलते मौसम
सब तो है प्रकृति का प्रकोप।
इन सबसे बचने का तो एक उपाय
पेड़ लगाओ साफ रखो घर द्वार।।
धरती कहती हमसे चीख चीख कर
रोको रासायनिक प्रयोग ।
लुप्त हो जाऊँ मै भी ये अचरज नही
अगर ऐसे ही होते रहे मुझपर प्रयोग।।
धुआँ धुआँ सा गहरा लगता क्यूँ है?
प्रदूषण का पहरा इतना गहरा क्यूँ है?
फटे हाल सा हवा पानी चिथरा चिथरा
दम घुँटता सा शहर दर शहर विखरा विखरा।
ऐसे तो पूर्वजो ने विरासत दी तो न थी
बना डाला कैसा संभालने की तरकीब न थी।

आशुतोष
पटना बिहार

परिधि के उस पार काव्यसंग्रह का विमोचन

इटावा की शिक्षिका युवा कवयित्री एवं लेखिका ज्योति अग्निहोत्री 'नित्या' द्वारा रचित ष्परिधि के उस पारष ई–काव्यसंग्रह का भव्य ऑनलाइन लोकार्पण समारोह दिनांक 31 मई 2020 को 'विश्व जनचेतना ट्रस्ट भारत' के तत्वावधान में जय–जय काव्यचित्र शाला के भव्य दिव्य आयोजन में किया गया।कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राजेश कुमार जैन थे। कार्यक्रम संरक्षक डॉ०राहुल शुक्ल 'साहिल', राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व जनचेतना ट्रस्ट भारत एवं कौशल कुमार पांडेय आस, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व जन चेतना ट्रस्ट भारत, रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुसकान ने माँ सरस्वती वंदना की सुमधुर प्रस्तुति से किया। तदुपरांत 'नित्या' ने पं. नरेन्द्र शर्मा द्वारा लिखे स्वागत गीत से समस्त विद्व त्जनों का कार्यक्रम में हार्दिक स्वागत किया। ज्योति अग्निहोत्री शनित्याश्द्वारा रचित 'परिधि के उस पार' ई काव्य संग्रह का लोकार्पण वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. भगवत स्वरूप शुभम ने किया।

काव्य संग्रह का विमोचन करते हुए उन्होंने पुस्तक को सार्थक तथा रचनाओं को भावप्रधान एवं हृदयस्पर्शी बताया।

ओम प्रकाश फुलारा 'प्रफुल्ल' उत्तराखण्ड इकाई अध्यक्ष, ने सहयोगी लोकार्पणकर्ता की भूमिका निभाई। कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ०राजेश कुमार जैन ने कहा कि, प्रस्तुत ई काव्य संग्रह में कवयित्री ने कविता रूपी दिव्य सुगंधित पुष्पों की अलौकिक पुष्प वीथिका में पाठकों को आमंत्रित कर, उन्हें अपनी कविता रूपी पुष्पों से झूमती, इठलाती, मचलती, पाठकों को पल प्रतिपल विस्मित करती कविताओं से परम् आनन्द की निर्झरिणी में गोते लगवाकर सुखानुभूति प्रदान कर,पाठकों के हृदय में अपनी कोमल कविताओं की अमिट छाप छोड़ी है।ष्इस अवसर पर विश्व जन चेतना ट्रस्ट भारत के संस्थापक आ०ष्दिलीप कुमार पाठक 'सरस' ने कहा कि काव्यसंग्रह साहित्य जगत में मील का पत्थर साबित होगा।

सुशीला धस्माना 'मुस्कान', अध्यक्ष, विश्व जन चेतना ट्रस्ट भारत ने कवयित्री के एकल संग्रह को अनूठा व अप्रतिम बताते हुए कहा कि प्रस्तुत काव्यसंग्रह की कोई रचना हमें सोचने पर विवश करती है तो कोई हमें प्रेरणा दे जाती है। साथ ही उन्होंने काव्य संग्रह के संपादक दिलीप कुमार पाठक'सरस', संकलनकर्ता ओम प्रकाश फुलारा 'प्रफुल्ल' और अलंकरण प्रमुख सुमित शर्मा 'पीयूष' जी को भी विशेष बधाई दी।ष्परिधि के उस पार पुस्तक के विमोचन की कड़ी में समर्पित भाव से अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए कौशल कुमार पाण्डेय आस ने अपने करकमलों से ज्योति अग्निहोत्री 'नित्या' को **वागीश्वरी पुंज अलंकरण** से अलंकृत किया। उन्होंने कहा कि यह काव्य संग्रह समाज का मार्गदर्शन करने में अपनी भूमिका रखेगा।

इस अवसर पर छंदगुरु शैलेन्द्र खरे सोम एवं संस्था के सभी राज्यों के अध्यक्ष उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का सफल संचालन कर नितेन्द्र सिंह परमार 'भारत' राष्ट्रीय प्रवक्ता, विश्व जन चेतना ट्रस्ट भारत, ने कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया।

उपस्थित सभी वरिष्ठ साहित्यकारों मीना भट्ट, रवि रश्मि 'अनुभूति', डॉ. प्रभा जैन, मनोजकुमार तिवारी, मनोज कुमार खोलिया, संजय सिंह राजपूत'भव्य', डॉ. राहुल शुक्ला, पंकज शुक्ल 'प्राणेश', रामस्वरूप मयूरेश, आलोक कुमार यादव, आर सी प्रधान, खरे प्रवेश, आदेश शुक्ला, मधु गौर, लाडो, गीतांजली, मधु सक्सेना, कवि कृष्ण कुमार कश्यप, बृजेश त्रिवेदी ने ई काव्य संग्रह के लोकार्पण पर कवयित्री की रचनाओं को सराहा एवं शुभकामनाएं दीं। इनकी रचनाएँ यू एस और भारत के विभिन्न दैनिक, साप्ताहिक एवं सांध्य समाचार पत्रों, मसिक पत्रिकाओं और ई–पत्रिकाओं में निरंतर रूप से प्रकाशित हो रहीं हैं। इस सम्मान के पूर्व इन्हे शिक्षा और साहित्य जगत के प्रतिष्ठित मंचों द्वारा श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, नारी शक्ति सागर सम्मान, श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान, श्रेष्ठ टिप्पणीकार जैसे अनेको लब्ध प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हो चुके है। ज्योति अग्निहोत्री मैनपुरी निवासी मुन्नीलाल चौबे और अशोक चौबे की सुपुत्री हैं जो कि ग्राम बुआपुरा तहसील भरथना के निवासी धीरज अग्निहोत्री की पत्नी हैं ।विगत दिनो इन्हें विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान और विश्व जन चेतना ट्रस्ट द्वारा साहित्य वट सम्मान से नवाजा चुका है। वर्तमान में यह बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित इंग्लिश मीडियम विद्यालय रीतौर क्षेत्र भरथना जनपद इटावा पर बतौर सहायक अध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं ।इस शुभावसर पर बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश के जिला एवं ब्लॉक स्तर के अधिकारियों व विद्यालय के स्टाफय श्री विष्णु सिंह जादौन, अध्यक्ष,भारतीय अटल सेना राष्ट्रवादीयअतुल शर्मा, जिलाध्यक्ष, ब्राह्मण समाज महासभायकैप्टन कैप्टन जय शंकर झा,अध्य क्ष, कौशल सेवा फॉउंडेशन आदि ने बधाई दी।

परीक्षा परिणाम 27 तक

लखनऊ। यू.पी. बोर्ड की हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट के परीक्षाफल आगामी 27 जून तक घोषित कर दिये जायेंगे। उक्त आशय की जानकारी गत बुधवार को देते हुए उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने कहा कि बोर्ड परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है कोरोना के चलते देश भर में लॉकडाउन रहा। बावजूद इसके हमने सत्र विलम्ब नहीं होने दिया। बच्चों की ऑनलाइन कक्षाएं करवाईं।

उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि कोरोना संक्रमण की स्थिति को देखते हुए जुलाई में स्कूल खोले जा सकते हैं। यू.पी. बोर्ड परीक्षा–2020 के लिए 56.11 लाख परी क्षार्थियों ने अपना पंजीकरण कराया था लेकिन 51 लाख परीक्षार्थी शामिल हुए। हाईस्कूल की परीक्षाएं 12 दिन तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षाएं 15 दिन मात्र कार्यदिवसों में ही सम्पन्न हुईं। 16 मार्च से उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन प्रारम्भ हुआ लेकिन कोरोना संक्रमण को देखते हुए 18 मार्च को इसे रोक दिया गया था।

शचीन्द्र सान्याल जन–जन के हृदय में बसे रहेंगे

गोरखपुर। बनारस की धरती को अपने जन्म से पवित्र कर व गोरक्षनाथ के पवित्र स्थली पर अपनी अन्तिम सॉस लेते हुए ब्रिटिश दास्ता से मुक्त कराने में अपने सम्पूर्ण जीवन को होम कर देने वाले महान देशभक्त शचीन्द्र नाथ सान्याल के जन्मदिवस के अवसर पर आज सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला के षास्त्रीनगर स्थित आवास पर (कोरोना के कारण उचित दूरी व मास्क का प्रयोग कर) एक विचार गोष्ठी का आयोजन कर उन्हे याद करते हुए उपस्थित विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक संगठनों से सम्बन्ध लोगो के अलावां युवा छात्र एवं बच्चों ने अपनी भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। विचार गोष्ठी की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला एवं संचालन समाजसेवी सुरेष निषाद ने किया।

विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र अकेला ने देषभक्त षचीन्द्र नाथ सान्याल के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए कहा कि ''बाल्यावस्था से क्रान्तिकारी और गदर पार्टी के लोगों के साथ काम करने वाले देषभक्त सान्याल ने जिस सत्यनिष्ठा और लगन से कार्य किया है वह सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। वह पहले क्रान्तिकारी कहे जा सकते हैं, जिन्हें सक्रिय क्रान्तिकारी गतिविधियो के कारण दो बार काले पानी की घोर यंत्रणा भरी जेल की सजा हुई।

उन्होंने बहुत ही भावुक षब्दों में कहा कि पेषावर के एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्में हरिनाथ सान्याल के पुत्र शचीन्द्र का बाल्यकाल विद्रोह के रथ पर सवार था। इनके भाई रविन्द्र नाथ सान्याल को अंग्रेजों द्वारा गोरखपुर में नजरबन्द कर दिया गया। इसी कारण गोरखपुर इस क्रान्तिकारी का निवास स्थान बन गया। अपने मन में स्वतंत्रता की चाह रखने वाले षचीन्द्र अनेकों बार जेल गये, 52 वर्षो के जीवन काल का लगभग 25 वर्ष (दो बार कालापानी की सजा)को हॅसते–हॅसते आलिंगन करने वाले इस वीर सपूत को 1941 में आजीवन कारावास की सजा सुनायी गयी। क्षय रोग से ग्रसित होने पर ईलाज के लिए इन्हे नैनीताल के भुआली कैम्प भेजा गया, लेकिन सुधार न होने की दषा में इन्हे सुल्तानपुर जेल से रिहा कर उनकी इच्छा पर गोरखपुर स्थित दाउदपुर मोहल्ले में एक छोटे से मकान में ही उन्हे नजरबन्द किया गया। षचीन्द्र दा जैसे विप्लवी सदियों में कभी जन्म लेते है। श्री अकेला ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि दो–दो बार काले पानी की सजा भोगने वाले और अपनी आयु का प्रत्येक क्षण स्वतन्त्रता के संघर्ष के लिए समर्पित करने वाला यह परमवीर देशभक्त देशवासियों के लिए एक आदर्श स्मरण छोड़ गया, लेकिन इसे ''दुर्भाग्य कहें या देषभक्तों की उपेक्षा'' कि जिस षचीन्द्र नाथ सान्याल ने गोरखपुर के दाउदपुर मोहल्ले में अपनी अन्तिम सांसे लीं उसी शहर में न तो सान्याल की प्रतिमा है और न ही सरकार ने उन्हें धरोहर के रूप में अपनाया।

इसी क्रम में समाजसेवी सुरेष निषाद ने कहा कि अपने 52 वर्ष के जीवन काल में 25 वर्ष जेलों में गुजारने वाले सान्याल एक सच्चे कर्मयोगी, अदम्य साहसी, दृढ़ निष्चयी व्यक्तित्व के रूप में सदैव याद किये जाते रहेंगे। उपरोक्त अवसर पर आशीष प्रिय अग्रहरि ने कहा कि अथक क्रांतिकारी व महान संगठनकर्ता शचीन्द्र नाथ सान्याल राष्ट्रीय व क्रांतिकारी आंदोलनों के सक्रिय भागीदार होने के साथ ही क्रांन्तिकारियों के कई पीढ़ी के प्रतिनिधि भी थे।

उपरोक्त अवसर पर विवेक अग्रहरि ने कहा कि गदर पार्टी के अनुशीलन, युगान्तर अभिनव भारत हिन्दुस्तान जैसे सोशलिस्ट क्रान्तिकारी संगठकर्ता रहे सान्याल को क्या देश भुला पायेगा? वह सदैव जन–जन के हृदय में बसे रहेंगे।

विचार गोष्ठी के उपरान्त उपस्थित गणमान्य लोगो ने गोरखपुर शहर में षचिन्द्र नाथ सान्याल की प्रतिमा स्थापित किये जाने एवं उनके धरोहरों को संरक्षित एवं सुरक्षित करने की सरकार से मांग की।

विचार गोष्ठी में मुख्य रूप से सुभाष चन्द्र अकेला, के.पी. गुप्ता, विनोद कुमार गुप्ता, डॉ. एस.पी.सिंह, रमाकान्त पाण्डेय, सुरेष निषाद, विवेक अग्रहरि, आषीष प्रिय अर्ग्रहरि, प्रदीप अग्रहरि, सूरज चौरसिया, अल्ताफ खान सहित तमाम गणमान्य लोग उपस्थित रहे ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण सम्पर्क सूत्र

एम्बुलेन्स	–	108
मेडिकल कालेज	–	2501736
जिला चिकित्सालय–		2332177
गोरखनाथ चिकित्सालय–		2257570, 2257138
जिला महिला चिकित्सालय–2333500		
मुख्य चिकित्साधिकारी–		2336622, 9450883406
महिला चिकित्साधिकारी–9454455381		
प्राचार्य मेडिकल कालेज–9415210282		
मुख्य पशु चिकित्साधिकारी–		05512332236
कुलपति	–	2340458, 2330767
मण्डलायुक्त	–	94544175020
सीडीओ	–	2335927, 2333082
जिलाधिकारी	–	9454417544
जीडीए उपाध्यक्ष	–	9415210451
एडीएम एफ/आर–		9454417615
एडीएम प्रशासन	–	9454416210
एडीएम सिटी	–	9454416211
सिटी मजिस्ट्रेट	–	9454416512
तहसील सदर	–	9454416222

गोरखनाथ मंदिर कार्यालय

2255453, 2255455

प्राप्त सम्पर्क सूत्रों का यहां पर संकलन मात्र जनसहयोग की भावना से प्रेरित है। इसमें किसी प्रकार की त्रुटि के लिए समाचार पत्र उत्तरदायी नहीं होगा। विवाद की स्थिति में मूल दूरभाष निर्देशिका ही मान्य होगी।

कोरोना को मात

आज आपदा है बड़ी, परीक्षा की यही घड़ी।
तोड़ना कोरोना लड़ी, बड़ी नहीं बात है।
बात गर गौर होगी, इरादों में छोर होगी
समझलो भोर होगी, क्षण काली रात है।
रात से न क्षति होगी, परिपक्व मति होगी,
विचारों में गति होगी, देगी उसे मात है।
मात पूत को पुकारे, बाहर न जाना प्यारे।
कोरोना डाइन वहां, लगा बेठी घात है।।

कोराना महीन धार, चुपके से करे वार।
मानना नही है हार, हौसला बुलंद है।
फन्द को न पालना है, खुद को ही ढ़ालना है,
देश को भी पालना है, नहीं कोई द्वन्द्व है।
मन्द भारत मे चाल, विदेशों में ठोकी ताल।
कोरोना बेहाल यह देश क्यों पाबन्द है।
पाबन्दियां नहीं जहां, कोरोना फला है वहां,
सहा लोक डाउन तो, मंगल आनन्द है।२।

जान समय की चाल, ढ़ाल रख क्यो निढ़ाल।
मत गलने दे दाल कोरोना के काल की।
काल से काहे बैहाल,रोकनी पड़ेगी चाल,
हाल ही में काट डाल, रस्सी रस्सी जाल की।
जाल करती जलील, मत दे जरा सी ढ़ील,
कील ठोकना छाती में, खाल देख बाल की।
बाल बाल बच रहा इरादा जो सच रहा,
खैर नही होगी अब काल के कपाल की।३।

देवकी दर्पण, काव्य कुंज रोटेदा जिला बून्दी(राज.)

कलयुग के भगवान

गुप्ता जी काफी समय से लॉक डाउन के कारण अपनी दुकान नहीं खोल पा रहे थे।लेकिन वह इस बात से खुश था कि लॉक डाउन के समय को उन्होंने और उनके परिवार ने बड़े अच्छी तरीके से निभाया। कोरोना से लड़ने के लिए पुलि. सवालों और सभी सफाई कर्मचारी एवं डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ के द्वारा किए जाने वाले कार्यों से वे बहुत खुश थे।उनके घर के पास एक बार जब चार–पांच पुलिस वाले बाइक से आए तो सभी पड़ोस के लोग उनके ऊपर फूल फेंक रहे थे।सचमुच कलयुग में ये सभी के लिए भगवान की तरह काम कर रहे थे।

गुप्ता जी और उनका परिवार भी सबके बीच खड़ा होकर उनके लिए ताली बजा रहा था और फूलों की वर्षा कर रहा था।लगभग 60 दिनों बाद सरकार के आदेश के बाद सभी दुकानों को सप्ताह में तीन दिन खोलने का आदेश दे दिया।

गुप्ता जी को इस बात की खुशी थी कि कम से कम सप्ताह में 3 दिन दुकान खोलने के आदेश से अब काम धीरे–धीरे सही हो जाएगा।दुकान खोलने के बाद ग्राहकों के स्वागत के लिए उन्होंने सभी तरीके की कोरोना से बचने की सामग्री दुकान पर उपलब्ध कर ली।सोशल डिस्टनसिंग के लिए भी मार्क लगा दिए थे।

जो भी व्यक्ति दुकान में आएगा वो सैनिटाइजर से अपने हाथ धोकर ही दुकान में आएगा।सारी तैयारी करने के बाद गुप्ता जी ने अपनी दुकान में खड़े होकर ग्राहकों का इंतजार करना शुरू किया।लेकिन इक्का दुक्का लोग ही पूरे दिन में आये।उनके काम में अब पहले जैसी तेजी नहीं थी।लेकिन एक उम्मीद थी कि कुछ दिनों में सब ठीक हो जाएगा।

गुप्ता जी की दुकान में बहुत ही कम लोग आ रहे थे।आज दुकान खुलने की तीसरा दिन था।अचानक आठ–दस ग्राहक एक साथ दुकान के अंदर आ गए।वो सब अचानक ही अंदर आ गए थे।सभी लोग बिना लाइन में लगे दुकान में घुस गए और दो ने तो मास्क भी नही लगाएं हुए थे।

अभी गुप्ता जी को उन्हें एक दूसरे से दूर रहने के लिए कहने का मौका भी नहीं लगा था कि तभी कुछ पुलिस वाले भी दुकान के अंदर आ गए और दुकान में अधिक भीड़ देखकर गुप्ता जी को जबरदस्त डॉट लगा दी।

गुप्ता जी उन्हें समझाते रहे कि सब लोग अचानक एक साथ दुकान में आ गए।लेकिन पुलिसकर्मियों ने उनकी एक भी बात ना मानी और गुप्ता जी के नाम से चालान काट दिया।इस बात से गुप्ता जी बहुत दुखी हुए।इतना तो कमाया भी नही था।जिससे ज्यादा तो चालान ही कट गया।

जिन पुलिस वालों को अभी कुछ समय पहले ही वह भगवान मानकर उनके लिए फूल बरसा रहा था और ताली बजा रहा था।वह धीरे–धीरे अपने वास्तविक रूप में आ गए थे।गुप्ता जी उनके हाथ जोड़ते रहे।लेकिन उनकी सारी कोशिशों के बावजूद वो सभी भगवान रूपी पुलिसकर्मी उन्हें चालान थमा कर वहाँ से चलते बने।गुप्ता जी अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहे थे।

नीरज त्यागी, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश).

अपने आसपास हो रहे अन्याय, अत्याचार, अव्यवस्था अथवा घटना–दुर्घटनाओं के विरुद्ध आवाज उठायें और अपनी संघर्ष क्षमता को कलम के जरिये अभिव्यक्त करें भेजदें ghoonghatkibagawat@gmail.com पर हम आपकी आवाज को बुलन्द करेंगे अपने साप्ताहिक समाचार पत्र के माध्यम से।

स्थानीय पुलिस प्रशासन सम्पर्क सूत्र : पुलिस स्टेशन इंचार्ज (थाना प्रभारी)

सब इंस्पेक्टर यातायात–	9532911249
जी.आर.पी.	9454404411
बड़हलगंज	9454403501
बांसगांव	9454403502
बेलीपार	9454403503
बेलघाट	9454403504
कैम्पियरगंज	9454403505
कैंट	9454403506
चौरीचौरा	9454403507
चिलुआताल	9454403508
गगहा	9454403509
गोला	9454403510
गोरखनाथ	9454403511
गुलरिहा	9454403512
हरपुरबुदहट	9454403513
झंगहा	9454403514
खजनी	9454403515
खोराबार	9454403516
कोतवाली	9454403517
महिला थाना	9454403518
पिपराईच	9454403519
पीपीगंज	9454403520
राजघाट	9454403521
सहजनवां	9454403522
शाहपुर	9454403523
सीकरीगंज	9454403524
तिवारीपुर	9454403525
उरुवा	9454403526
जोनल सचिव यू.पी.ए.एन.एस.	945168786
मुख्य सुरक्षा आयुक्त	9794840701
सी.पी.आर.ओ.	974840055
महापौर	7607003600
नगर आयुक्त	7607003701
उपनगर आयुक्त	7607003612
नगर स्वास्थ्य अधिकारी	7607003696
क्षेत्राधिकारी	
यातायात	941520981
कोतवाली	9454401411
कैंट	9454401412
गोरखनाथ	9454401413
बांसगांव	9454401414
खजनी	9454401415
चौरीचौरा	9454401416
कैम्पियरगंज	9454401417
आई.जी.पुलिस	05512333707
	05512200797
पुलिस उप महानिरीक्षक	05512201047
डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस)	05512200668
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक	05512200858/9454400273
पुलिस अधीक्षक नगर	05512336004/9454400273
पुलिस अधीक्षक ग्रामीण	05512233015/9454401055
साइबर क्राइम प्रकोष्ठ	
एल.आई.यू. गोरखपुर	09454401726
महिला हेल्पलाइन	1090, 181
फायर ब्रिग्रेड	101, 2333333
पुलिस नियन्त्रण कक्ष	100

मासूम बच्चों की पीड़ा का अंतर्राष्ट्रीय दिवस

अंतर्राष्ट्रीय दिवस जनता को चिंता के मुद्दों पर शिक्षित करने के लिए, वैश्विक समस्याओं को संबोधित करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और संसाधन जुटाने के लिए, मानवता की उपलब्धियों को मनाने और सुदृढ़ करने के अवसर हैं। अंतर्राष्ट्रीय दिनों का अस्तित्व संयुक्त राष्ट्र की स्थापना से पहले है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र ने उन्हें एक शक्तिशाली वकालत उपकरण के रूप में अपनाया है। 19 अगस्त 1982 को फिलिस्तीन के सवाल पर एक विशेष सत्र में सयुंक्त राष्ट्र की महासभा ने प्रत्येक वर्ष के 4 जून को "मासूम बच्चों की पीड़ा का अंतर्राष्ट्रीय दिवस" मनाने का फैसला किया, इस दिन का उद्देश्य दुनिया भर में बच्चों द्वारा पीड़ित दर्द को स्वीकार करना है जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक शोषण का शिकार हैं। यह दिन बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

इसका कार्य बाल अधिकारों पर निर्देशित है

सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा, हमें सार्वभौमिक मास्टरप्लान प्रदान करता है ताकि बच्चों के बेहतर भविष्य को सुरक्षित किया जा सके। नए एजेंडे में पहली बार बच्चों के खिलाफ हिंसा के सभी रूपों को समाप्त करने के लिए एक विशिष्ट लक्ष्य शामिल है, और बच्चों के दुर्व्यवहार, उपेक्षा और शोषण को समाप्त करने के लिए कई अन्य हिंसा–संबंधी लक्ष्यों को मुख्यधारा में शामिल किया गया है।

अपराध की रोकथाम पर ध्यान

वर्ष 2012 में भारत में भी पॉक्सो के लागू होने के बाद भी बाल उत्पीड़न संबंधी अपराधों के मामलों में वृद्धि को देखते हुए वर्ष 2019 में पॉक्सो अधिनियम में कई अन्य संशोधनों के साथ ऐसे अपराधों में मृत्युदंड की सजा का प्रावधान किया गया है । इस अधिनियम में किये गए हालिया संशोधनों के तहत कठोर सजा प्रावधानों के साथ अपराध की रोकथाम से संबंधित उपायो पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस संशोधन के माध्यम से बाल उत्पीड़न के मामलों को रोकने के लिये सरकार और अन्य हितधारकों के सहयोग से बच्चों को व्यक्तिगत सुरक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और लैंगिक अपराधों आदि के बारे में अवगत कराना तथा इन अपराधों से संबंधित शिकायत एवं कानूनी प्रक्रिया के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है।

यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण

यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण करने संबंधी अधिनियम (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ओफ्फेंसेस एक्ट(पोक्सो) का संक्षिप्त नाम है। इस अधिनियम को 2012 में बच्चों के हित और सुरक्षा का ध्यान रखते हुए बच्चों को यौन अपराध, यौन उत्पीड़न तथा पोर्नोग्राफी से संरक्षण प्रदान करने के लिये लागू किया गया था। इस अधिनियम में 'बालक' को 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है और यह बच्चे का शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित करने के लिये हर चरण को ज्यादा महत्त्व देते हुए बच्चे के श्रेष्ठ हितों और कल्याण का सम्मान करता है। इस अधिनियम में लैंगिक भेदभाव नहीं है। "ज्ञातव्य है कि पिछले वर्ष मद्रास उच्च न्यायालय ने सुझाव दिया था कि 16 वर्ष की आयु के बाद सहमति से यौनिक, शारीरिक संबंध या इस प्रकार के अन्य कृत्यों को पोस्को अधिनियम के दायरे से बाहर कर देना चाहिये।

> हाल के वर्षों में, कई संघर्ष क्षेत्रों में, बच्चों के खिलाफ उल्लंघन की संख्या में वृद्धि हुई है। संघर्ष से प्रभावित देशों और क्षेत्रों में रहने वाले 250 मिलियन बच्चों की सुरक्षा के लिए और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

बच्चों का रखे ध्यान

"बाल यौन अपराध संरक्षण नियम, 2020 जागरूकता और क्षमता निर्माण के तहत केंद्र और राज्य सरकारों को बच्चों के लिये आयु–उपयुक्त शैक्षिक सामग्री और पाठ्यक्रम तैयार करने के लिये कहा गया है, जिससे उन्हें व्यक्तिगत सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूक किया जा सके। इस संशोधन के तहत शैक्षिक सामग्री के माध्यम से बच्चों के साथ होने वाले लैंगिक अपराधों की रोकथाम और सुरक्षा तथा ऐसे मामलों की शिकायत के लिये चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 जैसे माध्यमों से भी अवगत कराना है। व्यक्तिगत सुरक्षा में बच्चों की शारीरिक सुरक्षा के साथ ही ऑनलाइन मंचों पर उनकी पहचान से संबंधित सुरक्षा के उपायों, भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य को भी शामिल किया गया है।

बाल संरक्षण नीति

इस संशोधन में चाइल्ड पोर्नोग्राफी से जुड़े प्रावधानों को भी कठोर किया गया है। नए नियमों के अनुसार, यदि कोई भी व्यक्ति चाइल्ड पोर्नोग्राफी से संबंधित कोई फाइल प्राप्त करता है या ऐसे किसी अन्य व्यक्ति के बारे में जानता है जिसके पास ऐसी फाइल हो या वह इन्हें अन्य लोगों को भेज रहा हो या भेज सकता है, उसके संबंध में विशेष किशोर पुलिस इकाई या साइबर क्राइम यूनिट को सूचित करना चाहिये। नियम के अनुसार, ऐसे मामलों में जिस उपकरण (मोबाइल, कम्प्यूटर आदि) में पोर्नोग्राफिक फाइल रखी हो, जिस उपकरण से प्राप्त की गई हो और जिस ऑनलाइन प्लेटफार्म पर प्रदर्शित की गई हो सबकी विस्तृत जानकारी दी जाएगी।'बाल संरक्षण नीति'के नए नियमों के तहत राज्य सरकारों को बाल उत्पीड़न के खिलाफ "शून्य–सहिष्णुता" के सिद्धांत पर आधारित एक 'बाल संरक्षण नीति' तैयार करने के निर्देश दिये गए हैं।

केंद्र और राज्य सरकारें नियमित रूप से समय–समय पर बच्चों के साथ काम करने वाले सभी लोगों (शिक्षक, बस ड्राइवर, सहायक आदि, चाहे वे नियमित हों या अनुबंधित) को बाल सुरक्षा तथा संरक्षण के प्रति जागरूक करने एवं उन्हें उनकी जिम्मेदारी के प्रति शिक्षित करने के लिये प्रशिक्षण प्रदान करेंगी। संशोधन में बाल उत्पीड़न के मामलों पर कार्य कर रहे पुलिस कर्मियों और फॉरेंसिक विशेषज्ञों के लिये भी समय–समय पर क्षमता विकास संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन का भी सुझाव दिया गया है। ऐसा कोई भी संस्थान जहाँ बच्चे रहते हों या आते–जाते हों जैसे–स्कूल, शिशु गृह, खेल अकादमी आदि, को अपने सभी कर्मचारियों के बारे में पुलिस सत्यापन और उनकी पृष्ठभूमि की जाँच नियमित रूप से करनी होगी।

यौन उत्पीड़न मामले

यौन उत्पीड़न के मामले में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद विशेष अदालत मामले में किसी भी समय पीड़ित की अपील या अपने विवेक से पीड़ित को राहत या पुनर्वास के लिये अंतरिम मुआवजे का आदेश दे सकती है। ऐसे आदेश के पारित होने के 30 दिनों के अंदर राज्य सरकार द्वारा पीड़ित को मुआवजे का भुगतान किया जाएगा। बाल कल्याण समिति को यह अधिकार दिया गया है कि समिति अपने विवेक के अनुसार भोजन, कपड़े, परिवहन या पीड़ित की अन्य आकस्मिक जरूरतों के लिये उसे विशेष सहायता प्रदान करने के आदेश दे सकती है। इस तरह की आकस्मिक राशि का भुगतान आदेश की प्राप्ति के एक सप्ताह के अंदर पीड़ित को किया जाएगा।

क्या है 'बाल यौन अपराध संरक्षण नियम'

'बाल यौन अपराध संरक्षण नियम, 2020' देशभर में 9 मार्च, 2020 से लागू हो गया है। बाल यौन अपराध संरक्षण अधिनियम के माध्यम से पहली बार 'पेनीट्रेटिव सेक्सुअल असॉल्ट', यौन हमला और यौन उत्पीड़न को परिभाषित किया गया था। इस अधिनियम में अपराधों को ऐसी स्थितियों में अधिक गंभीर माना गया है यदि अपराध किसी प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस, सेना आदि के द्वारा किया गया हो।अधिनियम के तहत बच्चों से जुड़े यौन अपराध के मामलों की रोकथाम के साथ ऐसे मामलों में न्यायिक प्रक्रिया में हर स्तर पर विशेष सहयोग प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। साथ ही इस अधिनियम में पीड़ित को चिकित्सीय सहायता और पुनर्वास के लिये मुआवजा प्रदान करने की व्यवस्था भी की गई है। वर्ष 2019 में यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (संशोधन) विधेयक , 2019 के माध्यम से 'गंभीर पेनेट्रेटिव यौन प्रताड़ना' के मामले में मृत्युदंड का प्रावधान किया गया। हाल के वर्षों में, कई संघर्ष क्षेत्रों में, बच्चों के खिलाफ उल्लंघन की संख्या में वृद्धि हुई है। संघर्ष से प्रभावित देशों और क्षेत्रों में रहने वाले 250 मिलियन बच्चों की सुरक्षा के लिए और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। हिंसक अतिवादियों द्वारा बच्चों को निशाना बनाने से बचाने के लिए और अंतर्राष्ट्रीय मानवीय और मानव अधिकार कानून को बढ़ावा देने के लिए और बच्चों के अधिकारों के उल्लंघन के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए और अधिक किया जाना चाहिए।

डॉ. सत्यवान सौरभ,

महामारी के दंश में पगार नही

आज पूरा विश्व कोरोना महामारी का दंश झेल रहा है! जहां इस महामारी ने लाखों लोगों को बीमार कर दिया है वहीं इस महामारी ने लाखों लोगों की जान भी ले ली है! लाखों–करोड़ों लोग परेशानी के दौर से गुजर रहे हैं! कहते हैं अगर व्यक्ति को समय पर जीवन निर्वाह हेतु रोटी कपड़ा और मकान मिल जाए तो वह अपना और अपने परिवार का जीवन निर्वाह कर सकता है! किंतु इन सब चीजों को पाने के लिए एक रोजगार की आवश्यकता होती है! जहां से प्राप्त धन या सैलरी के माध्यम से वह आसानी से रोटी कपड़ा और मकान व भिन्न–भिन्न प्रकार के विकल्प जो जीवन निर्वाह में आवश्यक है प्राप्त कर लेता है! किंतु आज परिस्थितियां बदल चुकी है, क्योंकि आज लाखों–करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए हैं, और कंपनियां व उद्योग अपने कर्मचारियों को निकालने लगे हैं, व उनकी सैलरी भी नहीं दे रहे! जमीनी तौर पर देखा जाए तो हम लोग इसका अनुमान भी नहीं लगा सकते कि कितने लोग बेरोजगार हो गए हैं! ऐसे में पीड़ित व्यक्ति अपनी व्यथा किस से कहें और किसको सुनाएं! भारत में अब से कुछ दिन पहले भारत सरकार ने कुछ नियम लागू किए थे! जिसमें प्रमुखता से सरकार ने यह आग्रह किया था कि, सक्षम कंपनियां व उद्योग अपने कर्मचारियों का ऐसे समय में वेतन ना काटे और ना ही उन्हें नौकरी से निकाले!प्रथम महीने तो सब कुछ ठीक–ठाक चला ,और प्रथम महीने में तो ज्यादातर उद्योगों और कंपनियों ने सैलरी भी दे दी! किंतु अब ज्यादातर कंपनियां और उधोग अपने कर्मचारियों को सैलरी नहीं दे रहे हैं! और यदि कोई व्यक्ति सैलरी की मांग कर रहा है तो उसे कंपनी व उद्योग से निकाल दे रहे हैं! सरकार ने कुछ विभिन्न प्रकार के पैकेज कंपनियों व उद्योगों को उपलब्ध कराएं हैं! यही नहीं बल्कि ईपीएफओ इत्यादि में भी बहुत सारी सुविधाएं उपलब्ध कराई है! किंतु फिर भी जमीनी तौर पर देखा जाए तो, व्यक्ति को सैलरी ही नहीं मिलेगी तो वह अपना जीवन निर्वाह कैसे करेगा! उन उद्योगों और कंपनियों को तो हम कुछ नहीं कह सकते जो सैलरी देने में सक्षम नहीं हैं जो खुद बंद होने की कगार पर है ,और उनके हाल खुद खस्ता है! किंतु उन उद्योगों व कंपनियों का क्या जो सक्षम है जिन्होंने अब तक ना जाने कितना अरबों खरबों रुपए कमा कर जमा किए हुए हैं! क्या वह अपने कर्मचारियों को ऐसे समय में सैलरी उपलब्ध नहीं करा सकते! यदि सक्षम उद्योग व कंपनियां अपने कर्मचारियों का ध्यान नहीं रखेगी तो वह कर्मचारी कहां जाएगा जिस ने तन मन से इस कंपनी व उद्योग के लिए कार्य किया है ! अब धीरे–धीरे कंपनियों व उद्योगों में से कर्मचारियों का निकाला जाना प्रारंभ हो चुका है! ज्यादा कंपनियां व उद्योग यह कहकर पल्ला झाड़ रही है कि, जब हम कार्य ही नहीं कर रहे और हमें कुछ प्रॉफिट नहीं हो रहा ,तो हम अपने कर्मचारियों को सैलरी क्यों दें! कंपनियां और उद्योगों का यह कहना कोई विकल्प नहीं हुआ! ऐसे में पीड़ित व्यक्ति पर एक ही विकल्प बचता है वह है सरकार, जो उनकी समस्या का समाधान कर सकती है! हम सभी को इस विषय पर संज्ञान लेते हुए सरकार से आग्रह करना चाहिए कि वह भिन्न–भिन्न कंपनियों व उद्योगों को आर्थिक सहायता प्राप्त कराएं!तथा सभी कंपनियों व उद्योगों को निर्देश दे कि वह अपने कर्मचारियों को इस समय नौकरी से ना निकाले वह समय पर सभी को सैलरी उपलब्ध कराएं, जिससे कि कर्मचारी सैलरी प्राप्त कर अपने परिवार का जीवन निर्वाह कर सकें! यदि ऐसा करने में सरकार सहायक सिद्ध हुई तो,एक बहुत बड़ा वर्ग जो भिन्न–भिन्न कंपनी व उद्योगो इत्यादि में सैलरी ना मिलने से परेशान और बेरोजगार हो चुका है!

> अब ज्यादातर कंपनियां और उधोग अपने कर्मचारियों को सैलरी नहीं दे रहे हैं! और यदि कोई व्यक्ति सैलरी की मांग कर रहा है तो उसे कंपनी व उद्योग से निकाल दे रहे हैं!

—अमित राजपूत

समाजिक व्यवहार में बदलते वक्त के साथ बदलाव अपेक्षित

लॉक डाउन के दौरान देशवासियों ने जो देखा और भोगा उसके बाद अनलॉक–1 में दी गई छूट एक ताजी हवा के झोंके के समान है जिसने घरों में बंद जनसमुदाय के जीवन में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया लेकिन इन तमाम रियायतों और राहतों के के बीच अनलॉक–1 पर सवाल उठ रहे हैं कि जब देष में प्रतिदिन पांच से 6 लाख नये करोना सवंमित मामले उजागर हो रहे हों तब लॉकडाउन में छूट देने का औचित्य क्या? वास्तव में लॉक डाउन के कारण पूरा देश थम सा गया था। करोड़ों देशवासियों के समक्ष रोजी रोटी का संकट आ गया था। आर्थिक मोर्चे पर आदमी से लगायत उद्योग प्रति सभी संकट को झेल रहे थे। ऐसे में राज्य की सलाह के बाद केन्द्र ने आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करने के उद्देश्य से लौकडाउन को चरणबद्ध तरीके से वापस लेना शुरू कर दिया। सरकारी, गैरसरकारी सभी दफ्तर अपनी शत–प्रतिशत क्षमता के साथ खुलने लगे। वहीं मानसून ने भी दस्तक दे दी है। ऐसे में अनाज व्यापार के लिए जून माह काफी मायने रखने लगाहै।

अर्थ व्यवस्था के नजरिये से देखा जाए तो नुकसान हुआ वह एक तरफ है अल्प आय वर्ग के सामने जो दिक्कतें आ रही थीं उनके मद्देनजर यह आवष्यक हो गया कि जन जीवन को सामान्य किया जाये। इसके साथ ही देश के नागरिकों की जिम्मेदारियां भी बढ़ गई क्योंकि कोरोना के बचाव में छोटी–छोटी बातो को नजर अंदाज करने का बड़े नुकसान का सबब बन सकता है। यहां यह भी ध्यान रखना होगा कि सरकारी प्रबंध एक सीमा के बाद समाप्त हो जायेंगे। अपने और अपने स्वास्थ्य के प्रति सजगता ही हमारी नैतिक व सामाजिक जिम्मेदारी है जिसे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि लौक डाउन के विभिन्न चरणों में प्रवासी कामगारों का पलायन हुआ है। दूर दराज के क्षेत्रों में काम करने वाली श्रमशक्ति का एक बड़ा हिस्सा अपने घरों और गांवों की ओर वापस आया हैं जिससे कोरोना संक्रमण के गांवों में फैलने की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। साथ ही देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की जो व्यवस्था है वह किसी से छिपी नहीं है। बहरहाल, लॉक डाउन के विभिन्न चरणों में सरकारों को इतना अवसर अवश्य उपलब्ध हो गया कि देश में कोरोना वायरस से लड़ने के लिए एक तंत्र को विकसित कर लिया गया। यदि आपदा अपना आकार बढ़ा रही है तो हम उससे मुकाबला करने के लिए तैयार हैं।

> यह तय मान लीजिए कि कोरोना के बाद पहले की अपेक्षा काफी बदला–बदला होगा हमें एक नये जीवन शैली के साथ अपने भविष्य की राह तय करनी होगी।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि लॉकडाउन के समय को देश के नागरिकों ने बड़े धैर्य और साहस के साथ मिलकर पार किया लेकिन अभी खतरा टला नहीं। अब तो बाजार में भीड़ भी बढने लगी। सड़कों पर आवागमन भी शुरू हो गया है। ऐसा लगता है कि लोगों के मन से कोरोना का भय समाप्त हो गया है। यह एक अच्छा संकेत है। जो देशवासियों की सकारात्मकता और स्वस्थ मानसिकता का परिचायक है लेकिन यह बेपरवाही भी आने वाले समय में हमारे लिए खतरा न बन जाये। क्योंकि अनलॉक के अगले चरण में अभी स्कूल, शिक्षण संस्थान, कालेज प्रशिक्षण संसथान, शॉपिंग मॉल, काम्पलेक्स, होटल, रेस्तरां धार्मिक स्थल जैसे अनेक सार्वजनिक स्थल भी पूर्णरूप से खोले जाने हैं।

भारत उन देशों में शुमार है जहाँ महिलाओं को घर से बाहर खुद को साबित करने के लिए लम्बे इंतजार का तारीखी बोझ नहीं उठाना पड़ा। विशेषतया सार्वजनिक जीवन में जब महिलाओं ने कदम बढ़ाना शुरू किया था जब दुनिया में आधुनिकता की महक ठीक ढंग से नहीं फैली थी। इस लिहाज से महत्वपूर्ण नाम है अहिल्याबाई होल्कर। उन्होंने न सिर्फ पति और ससुर के देहांत के बाद गद्दी संभाली बल्कि एक ऐसे शासन का उदाहरण प्रस्तुत किया जो हर दौर के लिए आदर्श बना रहेगा

बहादुर योद्धा, प्रभावशाली शासिका और कुशल राजनीतिज्ञ अहिल्याबाई होल्कर

बात उन दिनों औरंगजेब के बाद देश में मुगलों की शक्ति क्षीण होकर बिखराव के कगार पर थी तभी मराठाओं की शक्ति का तेजी के साथ विस्तार हो रहा था। इसी दौरान पेशवा बाजीराव ने अपने कुछ सेनापतियों को छोटे–छोटे राज्यों का स्वतन्त्र प्रभार सौंप दिया था। इसी तारतम्यता में मालवा की जागीर मल्हाराव होल्कर को मिली। इन्होंने अपने राज्य की राजधानी इन्दौर को बनाया।

माल्हाराव का एक पुत्र खण्डेराव था जो न तो पराक्रमी था और न ही राजकाज में निपुण। लिहाजा मल्हाराव की ख्वाहिश थी कि उन्हें एक ऐसी पुत्रवधू मिले जो उनके बेटे के साथ–साथ राज्य को भी कुशलता के साथ संभाले। कहा जाता है कि अपनी तलाश के सिल. सिले में मल्हाराव को एक बार कहीं से लौटते समय विलम्ब हो गया और उन्होंने निकट के गाँव में ही ठहरना उचित समझा। उन्होंने देखा कि गाँव के लोग एक मंदिर में शाम की आरती के लिए जा रहे हैं। तभी उनके कानों से एक सुरीली मद्धिम सी सुमधुर आवाज टकराई। जब उन्होंने पलट कर देखा तो एक बच्ची जिसकी उम्र लगभग 12 के आसपास की रही होगी। मंदिर के अन्दर आरती गा रही है। यह बच्ची कोई और नहीं अहिल्या थी।

> उनके राज्य में सड़कें दोनों तरफ से वृक्षों में घिरी रहती थीं। राहगीरों के लिए कुएं और विश्रामघर बनवाए गये। गरीब, बेघर लोगों की जरूरतें हमेशा पूरी की गईं। आदिवासी कबीलों को उन्होंने जंगली जीवन छोड़कर गांवों में किसानों के रुप में बस जाने के लिए मनाया। हिन्दू और मुसलमान दोनो धर्मों के लोग समान भाव से उस महान रानी के श्रद्धेय थे और उनकी लम्बी उम्र की कामना करते थे।
>
> एनी बेसंट

मल्हाराव को लगा जैसे उनकी तलाश पूरी हो गयी। फिर क्या था? उन्होंने बच्ची के पिता से मुलाकात की और रात्रिभोज के बाद उन्होंने अपना प्रस्ताव बच्ची के पिता मन्कोजी के सम्मुख अहिल्या को अपनी पुत्रवधू बनाने का रखा। मन्कोजी ना नहीं कर सके और मान गये। इस प्रकार से बच्ची अहिल्या होल्कर परिवार की पुत्रवधू बनी।

अपनी ससुराल जाने के बाद अहिल्या ने कुछेक कठिनाइयों के बाद राजभवन के सभी लोगों का दिल जीत लिया। एक दिन खबर आई कि अहिल्या के पति खण्डेराव होल्कर युद्ध के मैदान में अपनी जान लुटा बैठे। अहिल्या के लिए यह सबसे बड़ा आघात था। परन्तु कुछ ही दिनों में स्थितियां सामान्य हुईं ओर अहिल्या अपने ससुर के कामकाज में हाथ बंटाने लगी।

अब, होल्कर राज्य विकास की राह पर चल पड़ा, लेकिन तभी मल्हाराव भी चल बसे। यह भी अहिल्या के लिए एक बड़ा झटका था। उन्हें जल्द ही राज्यहित में एक बड़ा निर्णय लेना था। शायद नियति को कुछ और ही मंजूर था। राजतिलक के कुछ समय के बाद अहिल्या के बेटे मालेराव का भी निधन हो गया। अब अहिल्या के लिए कठिन परीक्षा की घड़ी थी। इससे पहले कि राज्य में कोई भितरघात या विरोध की स्थितियां उत्पन्न हों अहिल्या ने खुद ही राजगद्दी पर बैठने का निर्णय लिया।

इस प्रकार से मालवा की यह राजरानी कुशल योद्धा, प्रभावशाली महिला शासिका के साथ ही साथ सक्षम राजनीतिज्ञ भी थीं। इन्दौर उनके 30 वर्षीय शासनकाल के दरम्यान छोटा सा गांव फलते–फूलते शहर में तब्दील हो चुका था। रानी अहिल्या ने 70 वर्ष की उम्र में अंतिम सांस ली उनके बाद उनके विश्वसनीय तुकारामजी होलकर ने सत्ता की कमान संभाली।

ऐसे आता है मानसून

भारत में मानसून दस्तक दे चुका है। प्रत्येक वर्ष मानसून जून से सितम्बर के बीच केरल से शुरू होता है। इससे पूर्व में प्री–मानसून बारिश होती है। इस वर्ष पूर्व और पूर्वोत्तर भारत में बारिश शुरू हो गयी है।

अंग्रेजी शब्द मानसून पुर्तगाली शब्द मान्सैउसे शब्द से बना है। मूलरूप से यह शब्द अरबी शब्द मावसिम (मौसम) से आया है। यह शब्द हिन्दी, उर्दू और उत्तरभारतीय भाषाओं में भी प्रयोग किया जाता है जिसकी एक कड़ी डच शब्द मॉनसन से भी प्राप्त होती है।

भारत में मानसून जून से लेकर सितम्बर माह तक सक्रिय रहता है। मौसम विभाग कई पैमानों का प्रयोग कर इन चार महीनों के दौरान होने वाली मानसून की बारिश की मात्रा को लेकर भविष्यवाणी करता है।

सूच्य है कि भारतवर्ष में 127 कृषि जलवायु सब–जोन हैं। कुल 36 जोन हैं जो समुद्र हिमालय और रेगिस्तानी मानसून को प्रभावित करते हैं। इसलिए मौसम विभाग सटीक अ नुमान लगाने में कभी–कभी चूक जाता है। गर्मी के मौसम में जब हिन्द महासागर में सूर्य विषुवत रेखा के ठीक ऊपर रहता है तब मानसून बनता है। इस प्रक्रिया में गर्म होकर समुद्र का तापमान 30 डिग्री तक पहुंच जाता है। उस दौरान धरती का तापमान 45–46 डिग्री तक पहुंचता है। इन परिस्थितियों में हिन्द महासागर के दक्षिणी हिस्से में मानसूनी हवाएं सक्रिय हो जाती हैं। यह हवाएं एक दूसरे को क्रॉस करते हुए विषुवत रेखा पार कर दक्षिण एशिया की तरफ बढ़ती हैं। इसी दौरान समुद्र के ऊपर बादलों के बनने की प्रक्रिया शुरु हो जाती है। विषुवत रेखा पार कर हवाएं और बादल बारिश करते हुए बंगाल की खाड़ी और अरब सागर की ओर रुख करते हैं। इस दरम्यान देश के तमाम हिस्सों का तापमान समुद्र तल के तापमान से अधिक होता है। ऐसी स्थिति में समुद्री हवाएं जमीनी हिस्सों की ओर बहती हैं। ये हवाएं समुद्र के जल के वाष्पन से पैदा होने वाली वाष्प को सोख लेती है। धरती पर आते ही ऊपर उठती हैं तथा बारिश करती हैं। बंगाल की खाड़ी और अरब सागर में पहुंचने के बाद समुद्र से उठी मानसूनी हवाएं दो शाखाओं में विभक्त हो जाती हैं। एक शाखा अरब सागर की तरफ से मुंबई, गुजरात और राजस्थान होते हुए आगे बढ़ती है तथा दूसरी शाखा बंगाल की खाड़ी से पश्चिम बंगाल, बिहार, पूर्वोत्तर होते हुए हिमालय से टकराकर गंगीय क्षेत्रों की ओर मुड़ जाती है।

देश का नाम परिवर्तन करने संबंधी याचिका संबंधित मंत्रालय में होगी प्रस्तुत

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने देश का नाम इंडिया से बदलकर भारत करने वाली याचिका खारिज करते हुए कहा कि इसकी कापी को संबंधित मंत्रालय में भेजा जाये, वहीं फैसला होगा। याचिकाकर्ता यह मांग सरकार के समक्ष प्रस्तुत करे। संविधान में भी भारत नाम इंडिया, दैट इस भारत लिखा है।

मुख्य न्यायाधीश एस.ए. बोबड़े, जस्टिस एस बोपन्ना और जस्टिस हृषिकेश राय की खण्डपीठ ने उपरोक्त प्रकरण पर वीडियो कान्फ्रेन्सिंग करते के जरिये सुनवाई करते हुए कहा कि ऐसे नाम बदलने के लिए संविधान में संशोधन करने का अदालत को निर्देश पारित नहीं कर सकता है। पीठ ने याचिकाकर्ता को याचिका की प्रतिलिपि संबंधित मंत्रालय को प्रतिनिधित्व के रूप में भेजने का निर्देश दिया, जो उचित रुप से इसका प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्रधान न्यायाधीश ने संविधान के आर्टिकल–1 का उल्लेख करते हुए कहा है कि–हम ऐसा नहीं कर सकते। वकील ने इंडिया नाम प्रस्तुत किया जो ग्रीक शब्द इंडिका से उपन्न है।

प्रकरण की वकालत कर रहे अधिवक्ता ने अपनी दलील में यह भी कहा कि इतिहास भारत माता की जय के उदाहरणों से भरा हुआ है।

जब याचिकाकर्ता ने कहा कि इस याचिका को बतौर प्रतिवेदन संबंधित मंत्रालय के समक्ष प्रस्तुत किये जाने की अनुमति प्रदान की जाए। इसके बाद न्यायालय ने इसकी इजाजत दे दी।

गत दिनों गुजरात स्थित भरूच के दाहेज में एक रसायन फैक्ट्री की भट्टी में लगी आग में 9 मजदूरों की जहाँ मौत हो गई वहीं दूसरी ओर तकरीबन 40 से अधिक की संख्या में घायल हो गये। सभी घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल ले जाया गया। मौके पर पहुंचे प्रशासनिक अमले ने मामले की तहकीकात शुरू कर दिया है।

सेवाओं की गुणवत्ता एवं उपलब्धता में सुधार सर्वोच्च प्राथमिकता : उप महाप्रबंधक

गोरखपुर। एसबीआई ने पुनर्गठन की नई व्यवस्था के मद्देनजर वित्तीय समावेशन एवं सूक्ष्म बाजारों के लिए एक नया वर्टिकल शुरू किया है इसमें वित्तीय समावेशन कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की विभिन्न गतिविधियों पर विशेष ध्यान देने के लिए देश भर में बैंक की लगभग 8 हजार शाखाओं की पहचान की गई है। ताकि वे छोटे व्यवसायों और किसानों हेतु सूक्ष्म ऋण सहित सूक्ष्म खंड में विशेष सेवाएं प्रदान कर सकें। इस व्यवस्था में ग्रामीण अर्धशहरी और मेट्रो क्षेत्र में बैंक के 63 हजार से भी अधिक ग्राहक सेवा केन्द्रों की विशाल उपलब्धता में सुधार एवं सूक्ष्म वित्त क्षेत्र को बढ़ावा दिया जायेगा।

उपरोक्त आशय की जानकारी देते हुए भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, गोरखपुर के उप महाप्रबंधक पी.सी. बरोड ने कहा कि पुनर्गठन की नई व्यवस्था के तहत अंचल में 83 और 74 शाखाओं के तहत दो अलग वित्तीय समावेशन एवं सूक्ष्म क्षेत्र बनाए गये हैं तथा अंचल की वर्तमान व्यवस्था को डिजिटल एवं रिटेल बैंकिंग वर्टिकल का नाम दिया गया है जिसमें कुल 165 शाखाएं होंगी। गोरखपुर अंचल में महरागंज, देवरिया, सिद्धार्थनगर, संतकबीरनगर, अंबेडकरनगर, बस्ती, जिले की 275 शाखाएं थीं परंतु अब नई व्यवस्था के तहत बलिया, मऊ और आजमगढ़ जिलों की शाखाएं मिलकर अब अंचल में कुल 322 शाखाएं हो गई हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर इस नए वर्टिकल का नेतृत्व बैंक डीएमडी संजीव नौटियाल करेंगे जिसके तहत मंडल स्तर पर मुख्यप्रबंधक, क्षेत्रीय प्रबंधकों के अलावा जिला बिक्री हब के तहत ऋण वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाकर छोटे–छोटे ऋणों की मंजूरी एवं संवितरण में लगने वाले समय को कम करने का प्रयास किया जायेगा।

लॉक डाउन ने इकोनॉमी को मंदी के चंगुल में उलझाया

> सरकार आर्थिक मंदी की समस्या को दर किनार करके सारा दोष कोविड–19 या अन्य किसी के सर पर मढ़ने की कोशिशें छोड़कर यह स्वीकार करे कि इकोनॉमी में प्रत्येक स्याह/सफेद की जिम्मेदारी उसी की है

लॉक डाउन का निर्णय मार्च माह के अन्तिम सप्ताह में लिया गया अर्थात् पूरी तिमाही कोरोना के प्रभाव से बची रही। पिछले वित्तीय वर्ष के अंतिम तिमाही में विकास दर नीचे खिसक कर 3.1 फीसद पर आ गई, जो पूर्व वित्तीय वर्ष 2018–19 में 6.1 से काफी नीचे रिकार्ड की गई थी, जिसे बीते 11 वर्षों के दौरान सर्वाधिक निचले स्तर का समझा जाना चाहिए। स्मरणीय है कि कोरोना महामारी और लॉक डाउन के चलते अर्थ व्यवस्था को लगे झटकों से ठीक पहले की सूरत–ए–हाल बयान करते हैं साथ ही हमारे सामने नई मंदी के आधार वर्ष का नक्शा सामने रखने के लिए पर्याप्त है।

यह आंकड़े इतने कमजोर और निराशाजनक हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्थाा की बीमारी को महज कोरोना (कोविड–19) से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। विदित है कि हमारी अर्थव्यवस्था काफी सुस्त रही है। जून–2018 के बाद से लगातार सातवीं तिमाही है जब विकास दर या तो नीचे की खिसक रही है या फिर स्थिर रही। इस मद्देनजर सरकार की ओर से ऐसा कुछ नहीं पुख्तातौर पर कहा गया जिससे यह स्पष्ट हो सके कि अर्थव्यवस्था में किस प्रकार की गड़बड़ी पैदा हो गई है, और इस दुर्व्यवस्था को ठीक या दुरुस्त करने के लिए क्या कदम उठाये जा रहे हैं।

वर्तमान वित्तमंत्री द्वारा पिछले वित्तीय वर्ष के लोकलुभावन बजट प्रस्तुत करने के बाद इकोनॉमी के प्रत्येक हिस्सों पर जिस तरह की प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं, जिस प्रकार से बजटीय उद्घोषणाओं में रद्दोबदल करने में संलग्न हुई उससे अर्थव्यवस्था में स्थिरता और विश्वसनीयता सम्बन्धी अनेक प्रकार के सवाल उठने लगे अपने निर्णयों में बार–बार संशोधन करने और किश्तों में राहत देने से लोगों में इस बजट को लेकर अनेक प्रकार की आशंकाओं ने जन्म लेना शुरू कर दिया।

यदा–कदा लोगों में यह भी पनपने लगा कि सरकार के निर्णयों के प्रति अपना कोई ठोस तर्क नहीं है।

बावजूद इसके इस दिशा में वित्तमंत्री द्वारा कोई पहल नहीं की गई।

बहरहाल, पिछले वित्तीय वर्ष की भांति इस वर्ष भी अंतिम तिमाही में लाकडउन की घोषणा ने अर्थव्यवस्था को आर्थिक मंदी के चंगुल में उलझाकर रख दिया जिससे बाहर निकलने के लिए शेष दुनिया से ज्यादा हमें मेहनत करनी होगी।

ध्यातव्य है कि वर्ष–2008 की मंदी किसी को नहीं भूली उस पर राहत वाली बात यह थी कि मंदी के ठीक पहले अर्थव्यवस्था अपने उठान पर थी और सरकार अपनी तरफ से पैसा झोंक कर इकोनॉमी को गति प्रदान करने की स्थिति में थी। ताजा आंकड़े इस बात के भी साक्षी हैं कि यह सुविधा इस बार सरकार के पास नहीं है।

घूँघट की बगावत

गोरखपुर, रविवार, 7 जून 2020 www.ghoonghatkibagawat.com

पर्यावरण पर लॉकडाउन के पड़े है सकारात्मक प्रभाव

पर्यावरण की चिंता करने वाले और उसे लेकर अपने स्तर पर लगातार प्रयास करने वाले लोगों और संस्थाओं के लिए विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) लॉक डाउन के कारण स्वच्छ हुई प्रकृति को निहारते हुए आंतरिक खुशी प्रदान करने वाला है। स्वच्छ नदी, स्वच्छ हवा और वातावरण में आया यह बदलाव भाग–दौड़ भरे जीवन में हरियाली की वापसी है। जो मन को बड़ी राहत दे रही है। हालांकि इस हरियाली और राहत की एक बड़ी कीमत भी मनुष्य सभ्यता ने चुकाई है।

कोरोना महामारी के चलते पूरी दुनिया में मौत का तांडव मचा हुआ है। यह एक बड़ा सच है कि मौत के तांडव के कारण यह पर्यावरण बदला है, अब इसकी कीमत से समझौता नहीं किया जाना चाहिए। अब हमें पर्यावरण को महामारी के बहाने नहीं, बल्कि अपने स्तर पर, आदतों में सुधार लाकर सरंक्षित करना जरुरी हो गया है। अब पर्यावरण को बचाने के लिए प्रदूषण पर हमेशा के लिए लॉकडाउन लगाना बेहद जरुरी हो गया है। लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था व सामाजिक ढांचे को तहस–नहस भले ही कर दिया हो, लेकिन सकारात्मक प्रभाव यह हुआ कि हवा, पानी का यह बदलाव किसी चमत्कार और बड़े लाभ से कम नहीं है। वैश्विक आंकड़े बता रहे हैं कि पिछले सत्तर वर्षों में किए गए तमाम प्रयासों और जलवायु परिवर्तन के असंख्य वैश्विक समझौतों के बावजूद पर्यावरणीय स्थिति में वो सुधार नहीं हो पाया था जो पिछले सत्तर दिनों में वैश्विक लॉकडाउन के चलते हुआ है। पर्यावरण और जीवन का अटूट संबंध है फिर भी हमें अलग से यह दिवस मनाकर पर्यावरण के संरक्षण, संवर्धन और विकास का संकल्प लेने की आवश्यकता है। यह बात चिंताजनक ही नहीं, शर्मनाक भी है। वैश्विक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि जिन देशों में वायु प्रदुषण अधिक था वहॉ कोविड–19 के मरीजों की रिकवरी कम हो पाई है। अमेरिका में 90 प्रतिशत मौत उन शहरों में हुई जहां वायु प्रदूषण अधिक है। इटली में भी जिन जगहों पर वायु प्रदूषण अधिक है वहां कोरोना के चलते होने वाली मौतों में इजाफा हुआ है। इटली के उत्तरी भाग में वायु प्रदूषण अन्य इलाकों की अपेक्षा काफी ज्यादा है और यहां कोरोना से मरने वालो की संख्या भी करीब तीन गुना ज्यादा है।

वायु प्रदूषण के कारण ही भारत में प्रतिवर्ष 10 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो जाती है। कोरोना संक्रमितों की संख्या भी देश के महानगरों में अन्य जगहों से अधिक है। मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई में यह आंकड़ा उछाल पर ही रहा है। मुंबई जैसे प्रदूषित शहरों में वायु प्रदूषण लंबे समय से काफी ज्यादा है। ऐसे में सांस संबंधी बीमारियों वाले लोगों की संख्या भी ज्यादा है। कोरोना के कारण सबसे ज्यादा मरने वालों की संख्या भी महाराष्ट्र में ही हैं। गौर करने वाली बात यह भी है कि जहां कोरोना वायरस फेफड़ों पर आक्रमण करता है वहीं वायु प्रदूषण फेफड़ों को कमजोर करता है, मतलब जहां वायु प्रदूषण ज्यादा होगा कोरोना का खतरा भी वहां खतरनाक रूप में रहेगा।

देश भर में लॉकडाउन के कारण जो पर्यावरण और हवा साफ हुई है देखने वाली बात होगी कितने दिनों तक यह साफ रहती है। नासा की हाल ही की एक रिपोर्ट बताती कि उत्तर भारत में वायु प्रदूषण पिछले 20 साल में सबसे कम हो गया है। ट्रैफिक वाहनों का धुआं हो या तमाम औद्योगिक इकाइयों के बंद होने से उनसे होने वाला उत्सर्जन शून्य के बराबर हो गया। निर्माण और खनन बंद होने से पर्यावरण को राहत मिली, नगरों से निकलने वाला कचरा कम हुआ, नदियों में पहुंचने वाले प्रदूषक तत्वों की मात्रा में भारी कमी दर्ज की गई।

वायु गुणवत्ता सूचकांक बेहतर स्थिति में पहुंचता हुआ नजर आया। यहां तक की नदियों में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा में अपेक्षाकृत आश्चर्यजनक वृद्धि होने से यह पानी पीने योग्य हुआ। क्या गंगा, क्या यमुना आदि अन्य महत्वपूर्ण नदियों व झीलों का जल साफ व पीने योग्य हो गया। पंजाब के जलंधर से 200 किलोमीटर दूर हिमालय के धौलाधार पहाड़ व उनपर पड़ी बर्फ साफ दिखाई देनी लग गई। दिल्ली की हवा साफ हुई तो आसमान भी चटख नीला दिखने लगा। चारों ओर परिंदों की चहचहाहट सुनाई देने लग गई।

यह सच है कि कोरोना महामारी से अर्थव्यवस्था को जो झटके लगे है, उससे बहुत सी इंसानी जिंदगियां तो बर्बाद होने के कगार पर है। साथ ही अरबों खरबों डॉलर के आर्थिक उत्पाद भी बर्बाद हुए है। पर इसकी क्षतिपूर्ति यदि कहीं से दिखाई देती है तो वो है पर्यावरण, क्योंकि गर्म हो रहे वायुमंडल से दुनिया को एक गहरा आघात लगता है । उससे निपटने के लिए नीति निर्माता, वित्तीय संस्थाएं व निवेशक यह सोचने पर मजबूर हुए हैं कि पर्यावरण संरक्षण के लिए आर्थिक पैकेज तैयार रखने होंगे। वैश्विक लॉकडाउन ने वायुमंडल के लिए वह काम कर दिया जो अब तक तमाम बड़े–बड़े हरित प्रोजेक्ट नहीं कर सके।

पर्यावरण पर लॉकडाउन के पड़े इस सकारात्मक प्रभाव ने दुनिया को इस बात के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्यों न पूरे विश्व में हर साल या प्रत्येक माह में कुछ दिन एक साथ आवश्यक सेवाओं और अनवरत चलने वाली इकाइयों को छोड़कर अन्य सभी गतिविधियों को बंद कर सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाया जाए। इसके लिए एक वैश्विक समझौते पर सहमति बनानी होगी।

सहमति इस बात पर भी बननी चाहिए कि लोग निजी वाहनों का सयुंक्त उपयोग करें। सार्वजनिक साधनों की उपलब्धता सुनिश्चित होनी चाहिए। निजी और सरकारी निवेश को हरित प्रोजेक्ट की ओर बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हमें इस बात को भी नहीं भूलना चाहिए कि हमारे देश में कोरोना से भी खतरनाक है प्रदूषित वातावरण कोरोना देर सवेर अच्छे–बुरे अनुभव दे कर चला जाएगा लेकिन उसके बाद हम पर निर्भर करता है कि हम इससे क्या सीख लेते हैं।

–संदीप सृजन

एक स्वस्थ शिशु को जन्म देना प्रत्येक विवाहिता का सुखद सपना ही नहीं वरन अनुभूति होती है जो एक पूर्ण महिला (माँ) का सुख अर्थात् मातृत्व सुख प्रदान करती है। हालांकि इस दौरान महिला को नाना प्रकार की पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है ले.किन एक नन्हीं सी किलकारी प्रसूता की सारी पीड़ाओं को हवा कर देती है। जिसकी गूंज सुनने के लिए प्रत्येक विवाहिता लालायित रहती है।

कुछेक महिलाएं तो प्रसव पीड़ा की कल्पना मात्र से घबराने लगती हैं जब कि कुछ तो सी सेक्शन का भी सहारा लेने से पीछे नहीं हटतीं। सी सेक्शन नवजात के जन्म की वह प्रक्रिया है जो प्रसूता की प्रसवपीड़ा को कम करती है और डिलेवरी भी कम समय में हो जाती है। वाटर बर्थ–प्रसव का एक नेचुरल तरीका है जिसमें महिला को लेबर पेन होने के पर एक बड़े पानी से भरे टब में बिठा दिया जाता है। इस प्रक्रिया में इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि पानी गुनगुना हो जिससे प्रसूता को प्रसव वेदना कम हो और डिलेवरी आसानी से प्राप्त हो।

जरूरतमंदों में खाद्य सामग्री का हुआ वितरण

नई दिल्ली। देश मे लॉक डॉउन से उत्पन्न हालातो के चलते कामगार मजदूरों की हालत बहुत दयनीय हो रही है।

ऐसे में अखिल भारतीय स्वयंसेवी संस्था सोशल एंड मोटिवेशनल ट्रस्ट,नई दिल्ली की अध्यक्षा एवं प्रसिद्ध कवयित्री ममता सिंह इन जरूरतमंदों की सहयोग कर रही है ।आज भी नोयडा सैक्टर 27 में हाथ रिक्शा चालकों,दैनिक मजदूरों व पटरी पर रहनेवाले जरूरतमंद लोगों के खाद्य सामग्री के किट वितरित किए। इस अवसर पर सुभाषवादी समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अशोक श्रीवास्तव का सहयोग रहा।

इस अवसर पर रबिन्द्रनाथ सिंह, अनिल सिन्हा, सुजीत तिवारी की सक्रिय भूमिका रही। संस्था की अध्यक्ष श्रीमती ममता सिंह ने बताया कि कोरोना के कारण उत्पन्न वर्तमान परिस्थितियों में रिक्शा चालकों एवं दैनिक मजदूरों के सामने रोजगार की कठिन समस्या सामने आ चुकी है। ऐसे समय में उनकी मदद के लिए इस संस्था द्वारा सहायता कार्यक्रमों का आयोजन कर अपनी सामाजिक दायित्व का निर्वहन किया जा रहा है। पूर्व में भी संस्था द्वारा जरूरतमंदों को कई बार खाद्य सामग्री दी गई है।

'कोरोना संक्रमण से बचने के लिए इम्युनिटी बढ़ाएं'

कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए इम्युनिटी का मजबूत होना बेहद जरूरी है ।कोरोना संक्रमण का दुष्प्रभाव ऐसे लोगों पर अधिक होता है, जिनका इम्युनिटी पावर कम होती है।

कोरोना के दुष्प्रभाव से बचने के लिए कुछ सावधानी–
नियमित रूप से हाथ साफ करे।

हाथ साफ करने के लिए निम्न प्राकृतिक और घरेलू उपचार काम में ले सकते हैं ।

प्राकृतिक पत्ती एलोवेरा जेल से, एप्पल साइड विनेगर से, नींबू के ताजा रस से, गेंदे के फूल से, फिटकरी से, हरे नीम की पत्ती की पेस्ट से

घर से जब भी बाहर जाए, सोशल डिस्टेंस बना कर रखे।मास्क लगाकर बाहर जाए, बाहर जाए जब चश्मा लगाए व ग्लोब्स पहनने,

कीटनाशक सेनिटाइजर तैयार करे–
विधि–रात को एक लीटर पानी मे 250 ग्राम हरे नीम की पत्ती धोकर भिगोदे।सुबह 10 मिनिट उबाल कर,आधा रहने पर छान कर 1चम्मच फिटकरी,1 छोटा नींबू का रस निचोड़े।सेनिटाइजर तैयार हो गया।कांच की बोतल में डाल कर काम मे ले।

नाक की सुरक्षा के लिए–नियमित रूप से नाक के दोनों नथुनों में सरसों के तेलध्गाय के देशी घीध्बादाम रोगन की 2–2 बून्द रोज डाले। हल्के गर्म पानी मे थोड़ा सेंधा नमक व 1चुटकी फिटकरी डाल कर जल नीति करे। साफ सूती कपड़े का मास्क या रुमाल को 2–3 सिल.वटे करके भी मास्क के रूप में इस्तेमाल करे।

आंखों की सुरक्षा के लिए–3 चम्मच शहद,1चम्मच सफेद प्याज का रस,1 चम्मच नींबू का रस,1चम्मच अदरक का रस सभी को मिलाकर एक कांच की शीशी में भरकर रखे।इसकी 1–1 बून्द सुबह –शाम आंखों में डाले। गाय के गुत्र को छानकर एक एक बूंद भी आंखों में डाल सकते है।

निम्न लिखित काढ़ा बनाकर नियमित ले–
गिलोय 3 इंच का तना, तुलसी के 7 पत्ते, काली मिर्च 2 बीज,दाल चीनी आधा इंच का टुकड़ा,सोठ 1चुटकी,या अदरक 3 ग्राम,पिपली आधा इंच का टुकड़ा,मुलेठी आधा इंच का टुकड़ा,एक लौंग, पुनर्नवा 2 ग्राम, सॉफ आधा चम्मच,छोटी इलाइची एक, एक बड़ी इलायची के 7 दाने, कच्ची हल्दी 3 ग्राम,दारू हल्दी 2 ग्राम,गुड़ स्वाद के अनुसार इन सब को 1गिलास पानी मे उबाले,आधा रहने पर छान कर सुबह नाश्ते के 30 मिनिट बाद तथा रात्रि में खाना खाने के 30 मिनिट बाद रोज ले।

दूसरा काढ़ा'– 12 इंच का गिलोय का तना को कूट कर एक गिलाश पानी मे उबाले,आधा रहने पर स्वाद के अनुसार शहद मिलाकर सुबह खाली पेट ले।

उच्च रक्तचाप,मधुमेह, जोड़ो के दर्द आदि हो तो वे 2 तने का काढ़ा ले सकते है। रात्रि में सोने से पहले 1 इंच कच्ची हल्दी का टुकड़ा कूट कर,1गिलाश दूध में उबाल कर सोते समय पिये।

गले का संक्रमण से बचाव–गरारा करे, गर्म पानी मे हल्दी डाल कर, गर्म पानी मे नींबू का रस डाल कर, गर्म पानी मे नमक डाल कर, गर्म पानी मे 1 चुटकी फिटकरी डाल कर गरारा करे। तीस मिनिट गले के ठंडी पट्टी लगाकर रखे। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए विटामिन सी और डी लेना आवश्यक है।

विटामिन सी प्रधान खाद्य पदाथ–आंवला, संतरा, मौसमी,अनानास, अमरूद, टमाटर, पपीता, कच्चाआम, स्टोबेरी,रसभरी,मुन्नका, किसमिस,अंकुरित अन्न, विटामिन C, बॉडी में स्टोर नही होता है, इसलिए रोज लेना चाहिए।

विटामिन डी प्रधान खाद्य पदार्थ–दूध और धूप इसका खजाना है।मशरूम,सोयाबीन का दूध,तफू पनीर(सोयाबीन के दूध से बनता है)सूरज मुखी के बींज धूप में पकने वाले काष्ठय फल(बादाम,अखरोट,तिल गोजा)ले। सुबह 8 से 10 बजे तक कि धूप में विटामिन डी प्रचुर मात्रा में मिलती है। सूर्य की तरफ पीठ करके धूप लेना चाहिए। शरीर में विटामिन डी का पर्याप्त मात्रा में होना बेहद जरूरी है।इसके फलस्वरूप संक्रमण के प्रभाव से बचा जा सकता है।

विटामिन डी शरीर में मजबूत होने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है,हड्डियां मजबूत होती है। शरीर पर होने वाले दुष्प्रभाव से बचाव होता है।

कोरोना वायरस विशेष रूप से स्वसन तंत्र पर वार करता है।

स्टीम ले–एक बर्तन में पानी उबालकर, उसमें 5– 6 बूंद नीलगिरी तेल की डालें। फेस को बर्तन के ऊपर रख कर,टॉवल से कवर करे। इससे श्वसन तंत्र मजबूत होगा।ब्रीदिंग एक्सरसाइज करे। 10 बार बांए नथुने को बंद कर, दांए से लंबी स्वास लेकर दाएं से निक.ाले 10 बार दांए को बंद कर बांए से लंबी स्वास लेकर बांए से निकाले, 10 बार नाक के दोनो नथुनों से लंबी स्वास लेकर निकाले, 10 बार मुंह से लंबी स्वास लेकर मुंह से निकाले, नेचुरल व सीजनेबल फल सब्जियां अच्छे से साफ करके खाए।

स्वसन तंत्र मजबूत और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए ब्रीदिंग एक्सरसाइज और आसन प्राणायाम अवश्य करे। ताड़ासन, पृष्ठभूमि ताड़ासन, पवनमुक्तासन, उत्तानप.ादासन,भुजंगासन, मत्स्यासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन,चक्रासन, सर्वांगासन, सूर्य नमस्कार, भस्त्रिका,कपालभाती, अन.ुलोम–विलोम,नाड़ी शोधन,उज्जाई, चेंटिंग करे।

कोरोना वायरस की दवा हमारे शरीर मे ही है।हमारे शरीर की इम्यूनिटी कोरोना की दवाई है।इसलिये हमे अपना सारा ध्यान अपनी इम्यूनिटी बढ़ाने पर देना चाहिए,तभी हम कोरोना को मात दे सकते है। शुद्ध भोजन करे,स्वास्थ्य रहे,प्रकृति के साथ रहे।

सुशीला बिस्वास
योगाचार्य व प्राकृतिक चिकित्सक
निदेशक, योग सेवा संस्थान,
न्यू जानकी पूरी,नई दिल्ली।

किसी को दी माफी कहीं किसी अपराध की वजह ना बन जाएं

जेसिका लाल हत्याकांड एक समय पर अखबारों और भारतीय मीडिया के सुर्खियों का हिस्सा बनने वाला बहुत ही बड़ा प्रकरण रहा। जहां एक व्यक्ति ने केवल शराब के लिए एक महिला को गोली मार दी। जेसिका नाम की महिला एक मॉडल थीं। 29 अप्रैल 1999 को गोली मार कर उनकी हत्या कर दी गई। जब वो एक भीड़ भरी उच्चवर्गीय पार्टी में एक प्रतिष्ठित बारमेड की तरह काम कर रही थी। यह हत्या कांड बहुत सारे लोगों के सामने हुआ। किन्तु बहुत से गवाहों के अपने बयान से पलट जाना और सबूतों के साथ हुई छेड़छाड़ के चलते निचली अदालत द्वारा जेसिका के अपराधी को रिहा कर दिया गया। किन्तु जनता के दबाव में एक बार फिर उच्च न्यायालय में सुनवाई की गई और उम्र कैद की सजा दी गई।

किन्तु जेसिका के अपराधी को वर्तमान समय में 14 वर्ष की सजा काटने के बाद ही जेल से रिहा कर दिया जा रहा है। जिसका कारण यह बताया जा रहा है कि उनका व्यवहार बहुत अच्छा है। साथ ही वह सजा सुनाएं जाने से पहले से ही जेल में थे इस लिए वह 16 से 17 साल तक की जेल काट चुके हैं।

सवाल यह नहीं है कि क्यों छोड़ा जा रहा है किसी व्यक्ति को जेल से। सवाल यह है कि, क्या आप के अच्छा व्यवहार आप के द्वारा किए गए अपराधों को खत्म कर सकता है। आप आवेश और ताकत के घमंड में आकर किसी की हत्या कर दें। फिर बाद में अपने अच्छे कार्यों के द्वारा किए गए अपराध से छुटकारा पा सकते हैं।

अच्छा व्यवहार क्या किसी के द्वारा किए गए अपराध की माफी की वजह बन सकता है। हमारे देश में किसी आम व्यक्ति को बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ता है। किसी अपराधी को सजा दिलाने के लिए। सालों का सफर सालों अदालतों के चक्कर लगाते हुए गुजरता है, इंसाफ पाने के लिए। कोई अपराधी उस समय अपने अपराध को मान कर पीड़ित का दर्द कम करतें हुए। अपने अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन नहीं करता है। वह उस समय पूरी कोशिश करता है कि उसे सजा ना हो।

यदि कोई व्यक्ति बहुत अच्छे कार्य करता है और उसके द्वारा किसी मासूम की हत्या करने का अपराध हो जाता है। गुस्से और घमंड में आकर। तब क्या हम यह कह कर उसे छोड़ सकते हैं, कि वह आज तक सभी कार्य अच्छे करते हुए आया है और यह उसका पहला अपराध है। इस लिए उसे हम आजाद कर सकते हैं। यदि उस वक्त भी किसी के अच्छे व्यवहार को नजर में र खतें हुए, सजा में माफी का प्रावधान रखा जाएं तब पीड़ित को कानूनी प्रक्रिया द्वारा इंसाफ मिलेगा यह कभी नहीं सोचा जा सकता है।

हमारे देश में आम व्यक्तियो के लिए कानूनी प्रक्रिया द्वारा इंसाफ प्राप्त करना पहले ही बहुत परेशानियों से भरा हुआ सफर रहता है। यदि उसके बाद हम किसी अपराधी को यह कह कर आजादी देने लगें कि उसका व्यवहार अच्छा है। तब हम कानून पर विश्वास करने वालों को नि. राश करेंगे। ऐसा नहीं है कि किसी व्यक्ति को अपने द्वारा किए गए प्रायश्चित के आधार पर माफी नहीं दी जा सकती है।

किन्तु हम 130 करोड़ की आबादी वाले देश में रह रहे हैं। जहां लोगों की मानवता प्रत्येक दिन दम तोड़ी है। कभी किसी बच्ची की चीखें, कभी किसी बेजुबान जानवर की चीखें। यदि हम अपराधियों को उनके अच्छे व्यवहार के चलते, माफी देते रहें। तब कैसे मासूम और बेकसूर लोगों को उनके अधि ाकार देंगे। यहां विचार एक अपराधी के अच्छे व्यवहार से ज्यादा, हमें इस बात पर करने की जरूरत है कि मासूम और बेकसूर लोगों के साथ अपराध करने वालों के लिए में कानून व्यवस्था का डर खत्म कर, हम उन्हें अपराध करने की छूट तो नहीं दे रहें हैं।

राखी सरोज
बदरपुर (नई दिल्ली)

हाइकू

कबीर थे वो
साहित्य में सबसे
अलग थे जो
नीरू नीमा को
लहरतारा ताल
तट मिले वो
मिला आनन्द
क्योंकि गुरु मिले थे
जो रामानन्द
पाठ पढ़ाया
राम को ही मोक्ष का
द्वार बताया
ज्ञान गढ़ो
रचनाओं के लिये
बीजक पढ़ो
काशी था छोड़ा
अंतिम साँस तक
पाखंड तोड़ा
कामात्य–लोई
कबीर के जाने से
दुनिया रोई।

नीरज कुमार द्विवेदी
गन्नीपुर–बस्ती,
उत्तरप्रदेश

मजदूर की स्थिति

सुमन ने पूछा आज जल्दी छुट्टी कैसे हो गई। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे और फूट–फूट कर रोने लगा, उसने बताया जब काम मिला ही नहीं तो छुट्टी किस बात की! पत्नी सुमन ने अपनी धोती के पल्लू से आंसू पोंछते हुए कहा कि आप अपना दिल छोटा ना करें। कोई बात नहीं, क्या हुआ अगर काम नहीं मिला तो हम लोग इस बार दशहरा का पर्व नहीं मनाएंगे।

साइकिल धूप में पूरी तरह से गर्म हो चुकी थी। भंवर सिंह भी भूख से व्याकुल हो उठा। लेकिन रोज की भांति आज भी उसे राजपुर चुंगी चौराहे पर काम के लिए उसे कोई लेने नहीं आया। जो काम करवाने वाले मालिक आए भी तो बहुत ही कम संख्या में थे। हजारों मजदूरों की संख्या होने के कारण भंवर सिंह को आज फिर काम ना मिल सका। सभी मजदूर साथियों को कोरोना के कारण लॉकडाउन के चलते बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इसमें हर उम्र के सभी मजदूर थे। किसी की पढ़ने की उम्र! जवान व किसी के बिल्कुल दूध जैसे सफेद रंग के बालो की उम्र के थे।

प्रथम चरण का लॉकडाउन खुलने से मजदूरी करने की अनुमति मिल चुकी थी। सभी लोग सामाजिक दूरी का पालन करते नजर आ रहे थे। वे सब मास्क के रूप में कोई नीले रंग, कोई हरे रंग, सफेद, जिस किसी के पास मास्क ना होने के कारण अपने अपने अगोंछे से मुंह डखे हुए थे। ये सब देखते देखते लगभग एक बज चुका था।

लेकिन आज उस गरीब, लाचार, निर्धन को कोई भी काम के लिए खरीद कर नहीं ले गया। उसने सभी से हाथ जोड़कर अनुरोध किया व उसने यहां तक कह दिया था। कि जो काम मिलेगा! वह उसे पूरी ईमानदारी के साथ निष्ठा पूर्वक करेगा। लेकिन आज लॉकडाउन के चलते सभी कामकाज ठप पड़े हैं तो काम के लाले तो पड़ेंगे ही।

कुछ क्षण के लिए भंवर सिंह सोचने लगा कि जब वह सुबह 7 बजे अपने घर से निकला था तो उसने अपनी पत्नी सुमन से वादा करके आया था कि आज उसे पक्का काम मिलेगा और कल दशहरा है तो परिवार के लिए खाने का राशन भी जरूर लेकर आएगा। बच्चों से भी बोला था कि जब वह शाम को घर पर वापस आयेंगे तो आपके लिए कनीले, खरबूजा व साथ में दशहरी आम जरूर लाउंगा। लेकिन आज वह यह सब ना कर सका।आखिर मै कैसा परिवार का मुखिया हूं। जो अपने परिवार का भरण–पोषण नहीं कर पा रहा हूं। मुझे इस दुनिया में जीने का कोई अधिकार नहीं है। उसने यह सब मन बना लिया था। कि अब उसे इस संसार में नहीं जीना!

घर वापस जाते समय और भी मजदूर साथी पूरी तरह से निराश दिखाई दिए। यह सब देख कर उसको ध्यान आया कि आज भारतवर्ष में लोकडाउन के चलते मजदूरों की स्थिति बहुत दयनीय है। खास कर यूपी और बिहार के मजदूर भाई प्रत्येक प्रदेश दिल्ली, महाराष्ट्र,गुजरात, आदि राज्यों से घर वापसी कर चुके है। आज आगरा में फैक्ट्रियां और कंपनियां होती। तो हजारों मजदूरों को शहर से बाहर जाकर अपनी जान गंवानी नहीं पड़ती।

देश की सरकारें कहती हैं, ना दिल्ली,ना मुम्बई जाना रोजगार अब घर पर पाना एक साल में सौ दिन काम पूरे दस हजार का हो इंतजाम, लेकिन इस पर भी गाज गिर चुकी है। इस समय गांव–गांव में मजदूर होने के बाद भी। बाह तहसील की कुछ ग्राम पंचायत में ग्राम प्रध ाान, ग्राम सचिव व रोजगार सेवक की मिली भगत के कारण आज मनरेगा का काम को जेसीबी के द्वारा कराया जा रहा है। दुखद पहलू हैं सरकारों को इसकी ओर ध्यान देना चाहिए।

साइकिल व हाथ में चार खाने का टिफिन लेकर घर वापस पहुंचा। यह सब देखकर पत्नी व बच्चों के चेहरे ि खल उठे कि पापा आज जरूर काम करके पैसे लाए होंगे और हमारे लिए खाने का सामान जरूर लाए होंगे।

सुमन ने पूछा आज जल्दी छुट्टी कैसे हो गई। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे और फूट–फूट कर रोने लगा, उसने बताया जब काम मिला ही नहीं तो छुट्टी किस बात की! पत्नी सुमन ने अपनी धोती के पल्लू से आंसू पोंछते हुए कहा कि आप अपना दिल छोटा ना करें। कोई बात नहीं, क्या हुआ अगर काम नहीं मिला तो हम लोग इस बार दशहरा का पर्व नहीं मनाएंगे।

पत्नी सुमन ने पति का चेहरा अपनी तरफ करते हुए कहा, अगर हम आज शिक्षित होते तो आज हमें ऐसे दिन देखना नहीं पड़ता और हां हम गरीब असहाय लोग अंधविश्वास, पाखंड जैसी घिनौनी हरकतों के पीछे नहीं पड़ते तो शायद ऐसी नौबत नहीं आती और आसानी से रोजगार भी मिल जाता। क्या मजदूरों की भारत में स्थिति ऐसी ही रहेगी? आज मजदूरों की देश में दयनीय दशा है। क्या आखिर मजदूर प्रवासियों को रोजगार मिलेगा?...........

.... –अवधेश कुमार निषाद मझवार
फतेहाबाद आगरा

जब रंजीत ने अपनी पुत्री के साथ नृत्य किया

नई दिल्ली। दिग्गज अभिनेता और अपने ज़माने के लोकप्रिय खलायक रणजीत ने बीते बुध ावार को अपनी बेटी के साथ डांस करते हुए एक वीडियो अपलोड करने के बाद आश्चर्यजनक रूप से रुझानों की सूची में स्थान पाया।

विदित हो कि इस वीडियो में पिता–पुत्री की जोड़ी को 1975 के क्लासिक शोले के महबूबा महबूबा के गीत पर नाचते हुए देखा जा सकता है।

सूच्य है कि रणजीत बॉलीवुड फिल्मों में 70 और 80 के दशक के सबसे लोकप्रिय खलनायकों में से एक थे। वह कुछ नाम करने के लिए अमर अकबर एंथनी, मुकद्दर का सिकंदर, सुहाग, द बर्निंग ट्रेन, लावारिस, रॉकी, किशन कन्हैया, हल्चुल, हिमालय से ऊना और धरम वीर जैसी फिल्मों में दिखाई दिए।

बॉलीवुड फिल्मों के अलावा, अभिनेता ने कई पंजाबी फिल्मों और टीवी शो जैसे कि बात बन जाए, आइसा देस है मेरा, घर एक सपना, जुगनी चली जालंधर, हिटलर दीदी और कभी कुछ भी होता है, जैसे कई फिल्मों में अभिनय किया।

मुझे नहीं पता कि किसी का फैन होना जुर्म है : मीरा चोपड़ा

नई दिल्ली। बालीवुड की अदाकारा मीरा चोपड़ा को ट्विटर पर रेप की धमकियां मिल रही हैं। दरअसल, एक्ट्रेस ने ट्विटर पर फैन्स के साथ सवाल–जवाब का सेशन रखा था। इस दौरान किसी फैन ने मीरा से जूनियर एनटीआर के बारे में सवाल पूछा, मीरा ने जवाब में कहा कि वह जूनियर एनटीआर को नहीं जानती हैं, वह उनकी फैन नहीं हैं। ज़रा सी बात पर जूनियर एनटीआर के फैन्स नाराज हो गए और ट्विटर पर मीरा चोपड़ा को भद्दी–भद्दी गालियां देने लगे और साथ ही एक्ट्रेस का रेप करने की तक की धमकी भी दी। इस दौरान जूनियर एनटीआर के फैन्स ने एक्ट्रेस के माता–पिता को कोरोना से मरने की बात भी कही और साथ ही मीरा को पोर्न स्टार बताया।

एक्ट्रेस मीरा चोपड़ा ने ट्रोलर्स के ट्वीट का स्क्रीनशॉट अपने ट्विटर हैंडल से शेयर किया और साथ ही जूनियर एनटीआर का ध्यान भी इसकी ओर खींचा। उन्होंने एक्टर को टैग करते हुए लि खा, मुझे नहीं पता था कि मुझे... पोर्नस्टार कहा जाएगा, बस केवल इस बात पर की मैं आपसे ज्यादा महेश बाबू को पसंद करती हूं और आपके फैन्स मेरे माता–पिता के लिए ऐसी बातें बोल रहे हैं। क्या आप ऐसी फैन फॉलोइंग होने से खुद को कामयाब समझते हैं? मैं उम्मीद करती हूं कि आप मेरा ट्वीट नजरअंदाज नहीं करेंगे।

मीरा चोपड़ा ने आगे लिखा, मुझे नहीं पता था कि किसी का फैन होना जुर्म होता है। मैं लड़कियों से यह चिल्ला कर कहना चाहती हूं कि अगर आप जूनियर एनटीआर की फैन नहीं हैं तो आपका रेप हो सकता है, हत्या हो सकती है, गैंग रेप और आपके पैरेंट्स की हत्या हो सकती है, उनके फैन्स के ट्वीट के अनुसार. वह अपने आइडल के नाम को बुरी तरह से खराब कर रहे हैं। मीरा चोपड़ा ने इस बात की शिकायत हैदराबाद पुलिस से भी की है।

नूतन समर्थ (जन्म 4 जून 1936–21 फरवरी 1991)–जिन्हें नूतन के नाम से जाना जाता है, एक भारतीय फिल्म अभिनेत्री थीं। लगभग चार दशक के करियर में, वह 70 से अधिक हिंदी फिल्मों में दिखाई दीं, जिसमें कई ने अभिनय किया।

घूँघट की बगावत

गोरखपुर, रविवार, 7 जून 2020

www.ghoonghatkibagawat.com

ई–पत्रिका 'साहित्य दर्शन' का विमोचन सम्पन्न'

'डॉ. राजेश पुरोहित की अनूठी पहल ने किया भवानीमण्डी के रचनाकारों को सक्रियः डॉ. अनिल गुप्ता'

भवानीमंडी। अखिल भारतीय साहित्य परिषद इकाई भवानीमंडी के पटल पर बीते सोमवार को ऑनलाइन विमोचन समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

परिषद द्वारा प्रकाशित प्रथम ई बुक 'साहित्य दर्शन' का विमोचन राजकीय बिड़ला महाविद्यालय भवानीमण्डी के प्राचार्य ,कवि,साहित्यकार डॉ. अनिल गुप्ता के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। ई बुक का विशेष अंक जिन्दगी विषय पर आधारित है। ई बुक के प्रधान संपादक डॉ. राजेश कुमार शर्मा पुरोहित ने बताया कि प्रस्तुत ई बुक साहित्य दर्शन के विशेष अंक में 26 रचनाकारों की रचनाएं शामिल हैं।

विमोचन समारोह के मुख्य अतिथि प्राचार्य ,कवि साहित्यकार डॉ. अनिल गुप्ता प्रेरणा स्रोत वरिष्ठ साहित्यकार मा.प्रताप सिंह , विशिष्ट अतिथि बाल साहित्यकार आ.अब्दुल मलिक खान साहब, राष्ट्रीय स्तर के कवि प्रमोद जैन पिन्टू जी, वीर रस के कवि राजेन्द्र आचार्य राजन जी रहे।

समारोह में सानिध्य जिनका रहा वे हैं निर्मल औदिच्य, उर्मिला औदिच्य, विशेष सानिध्य कौशल शर्मा , विशेष

सहयोगी कोषाध्यक्ष अरुण कुमार गर्ग जी, मीडिया प्रभारी हिमांशु चतुर्वेदी, मोहम्मद सगीर सागर दर्शन सिंह, महावीर प्रसाद जैन व अमनदीप सिंह का बहुत बहुत स्वागत। साथ ही समस्त कार्यकारिणी व सदस्य मौजूद रहे।

इस अवसर पर डॉ. अनिल गुप्ता ने कहा कि जिंदगी विषय पर श्रेष्ठ रचनाओं की पठन व संग्रह योग्य ई पुस्तिका इस संग्रह को तैयार करने में प्रधान सम्पादक डॉ. राजेश कुमार शर्मा 'पुरोहित' द्वारा की गई मेहनत प्रशंसनीय है। उनकी निरंतर सक्रियता ने, परिश्रम ने अखिल भारतीय साहित्य परिषद के सभी रचनाकारों को व अखिल भारतीय साहित्य परिषद को एक विशेष गति प्रदान की है अखिल भारतीय साहित्य परिषद के ऊर्जावान साहित्यकार इसी तरह अपनी लेखनी से नित्य नए साहित्य का सृजन करते रहें मुझे विश्वास है अखिल भारतीय साहित्य परिषद के कलाकारों का यह सृजन समाज की सोच को एक नई दिशा देगा।

अखबार के पेपर को पढ़ते हुए

अखबार के पेपर को पलटते हुए
देखा मैं एक महिला श्रमिक को
उतरी ट्रेन से वह
नौ दिन से भूखे थी
पास मा फुट कौड़ी भी नहीं
क्या खाए और क्या खरीदे
उसके पास एक बालक भी थी
और कुछ देर बाद
स्टेशन पर लेट गए
फिर ना हिली नहीं और ना डोली।
ऐसा लगा रहा था ,
दम तोर दी उसने
इस जीवन के जंग से
उसकी एक बालक
उसने मा का आंचल लिए
चारो ओर घूम – घूम कर खेल रहे थे
बालक को ज्ञात नहीं

उसका मां अब ना रही
अखबार के पेपर को पढ़ते हुए।

कौन करेगा अब उसका प्रविश ?
कौन उसकी प्यार दुलार से खिलाएगी?
कौन उसको गोद लेगी?
कौन उसको हाथ पकड़ कर घुमाए ?
अखबार के पेपर को पढ़ते हुए।

किसको आरोप लगाए वह बालक ?
किसने उस बालक की मा का खूनी?

कौन बालक का आश्रय देगा ?
कौन उसका भविष्य बनाएगा ?
वह तो छोटा सा बालक है।
ना कोर्ट कचहरी का ज्ञान
और ना सही से चल पा रहे ।
कौन मुवाजा दिलाए ?
कौन उसका देखभाल करेगा?
पढ़ा तो दिल पिसाज गए,
अखबार के पेपर को पढ़ते हुए।

आलोक राय
पूर्व बर्धमान
(पश्चिम बंगाल)

प्रवासी मजदूरों को अत्मनिर्भर बनायेगा जेनिथ कामर्स एकाडमी

पटना। कामर्स के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान जेनिथ कामर्स एकाडमी के डायरेक्टर सुनील कुमार सिंह ने बिहार के प्रवासी मजदूरों को अत्मनिर्भर बनाने का निर्णय लिया है। अपने मुल्क, अपनी नगरी, अपने लोगों से दूर होते हुए भी प्रवासी अपनी धड़कन में सभी को महसूस करते हैं।

दोस्तों संग बिताए पल, अपनों संग खट्टी–मीठी यादें सदा दामन थामे रहती हैं। प्रवासी मजदूर चार पैसे कमाने के लिए घर–परिवार गांव में छोड़ दूर शहरों में जा बसे थे। कोरोना संक्रमण में लॉकडाउन में कंपनियां, फैक्ट्री और कारखाने बंद हुए तो यह भी बेबस हो गए। जब सब्र ने दम तोड़ दिया तो पैदल ही अपने घरौंदों की ओर चल दिए और अब वापस अपने घर लौट आये हैं। लॉकडाउन के कड़वे अनुभवों को भुलाने में अभी वक्त लगेगा, लेकिन अपनी जमीं पर लौटने की खुशी को शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। देश के तमाम राज्यों से लौटे प्रवासियों के चेहरों को पढ़ने से यह बात साफ भी हो रही है। उदास चेहरों पर घर वापसी का नूर झलक रहा है।प्रवासी मजदूर अपने घर तो लौट आये हैं लेकिन उनके लिये फिर से दो जून की रोटी का संघर्ष एकाएक नए संघर्ष में बदल गया।

गांव में अपनों के बीच सुकून तो है, लेकिन फिर वही रोजी–रोटी की चिंता। जेनिथ कामर्स एकाडमी ने प्रवासी मजदूरों को आत्मनिर्भर बनाते हुये। उन्हें उनके ही गांव में रोजगार देने का निश्चय किया है। उन्होंने कहा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत गांवों में बसता है। उन्होंने वर्षों पहले ग्रामीण भारत की अर्थ व्यवस्था को मजबूत बनाने पर जोर दिया था, लेकिन आधुनिकता के बदलते स्वरुप के बीच बापू की बात पर भी वक्त की गर्द चढ़ती चली गई।

आज एक बार फिर कोरोना ने इस धूल को झाड़ दिया है। इन दिनों प्रवासी मजदूरों की हमवतन वापसी का जो दौर है, उसने सिद्ध कर दिया है कि गांव ही देश का मूल आधार हैं। सुनील कुमार सिंह ने बताया कि कोरोना विपत्ति काल में कई सारे लोगों ने निस्वार्थ भाव से गरीब मजदूरों की सेवा की है। कोरोनावायरस का खतरा अभी कम या खत्म नहीं हुआ है। बिहारी प्रवासी मजदूरों के सामने रोजगार एक बड़ी समस्या हो गई है ऐसे मजदूरों को उत्पादन से बिक्री तक प्रशिक्षित कर उन्हें स्वावलंबी बनाने की मुहिम में हम काम करने जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि शुरूआती दौर में हम अपनी कर्मभूमि पटना, पैतृक गांव मधेपुरा और जन्मभूम हजारीबाग में स्टार्टअप की शुरूआत कर रहे हैं। मजदूरों को उनके घरों में रोजगार मिलने पर न सिर्फ वह आत्मनिर्भर बनेंगे बल्कि उनकी रोजी–रोटी का संकट भी दूर होगा।

तंबाकू से जिंदगी बचाएं

जिंदगी
तंबाकू की हवा में मत उड़ाएं।
आज जिसे पी रहे ....???
एक नशे..... एक उन्माद में,
ऐसा ना हो यह जिंदगी पी जाएं।
जिंदगी तंबाकू की हवा में मत उड़ाएं।
जिंदगी के एहसास को,
लंबी–लंबी सांसो में जी जाएं।
ऐसी सांस तंबाकू के साथ ना लें।
जिससे जिंदगी काले धुएं में खो जाएं।

प्रीति शर्मा 'असीम'
नालागढ़ हिमाचल प्रदेश

कितनी सजीव होती हैं प्रवासी महिला सहायिकाएँ

प्रत्येक वर्ष, महिलाओं सहित बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक श्रमिक के रूप में, विदेशों में रोजगार के उद्देश्य से जाते हैं। विदेश मंत्रालय के अनुसार लगभग 3.91 लाख श्रमिकों ने 2017 में भारत से निर्वासन किया, इनमें से कई निवासी कम शिक्षित हैं, विशेष रूप से खाड़ी देशों में रोजगार के लिए जाने वाले निर्माण श्रमिक, नौकरानियाँ, नर्स आदि। ऐसे कई मामले हैं जिनमें ऐसे अशिक्षित/अर्ध–शिक्षित लोगों को अपंजीकृत बेईमान एजेंट पर्यटक और ऐसे अन्य वीजा पर विदेश भेजते हैं और आकर्षक रोजगार के अवसरों का वादा करके मनचाही रकम ऐंठते हैं एवं कानूनी कार्य वीजा वर्क परमिट रद्द करने की धमकी भी देते हैं। तत्पश्चात, इन कारगारों को महिलाओं सहित निजी नियोक्ताओं की दया पर विदेशी धरती पर छोड़ दिया जाता है।

ऐसे हजारों कार्यकर्ता को गैरकानूनी एजेंटों द्वारा विदेशी नौकरियों के नाम पर लालच दिया जाता है और विदेशों में शोषण किया जाता है तथा उनकी मदद के लिए कोई सन्निकट उपाय भी नहीं किया जाता है। महिला कार्यकर्ता सहित विदेशी श्रमिकों की कुछ प्रमुख शिकायतें हैं–वेतन का भुगतान न करना, वैधता को अस्वीकार करना श्रम अधिकार, लंबे समय तक काम करने का समय, चिकित्सा का गैर प्रावधान और बीमा सुविधाएं, नौकरानियों को छोड़ना इत्यादि। वर्तमान में, विदेश मंत्रालय का ई–माइग्रेट पोर्टल ईसीआर (एमिग्रेशन चेक रिक्वायर्ड) पासपोर्ट, 18 ईसीआर देशों (अफगानिस्तान, बहरीन, इंडोनेशिया, इराक, जॉर्डन, कुवैत,लेबनान, लीबिया, मलेशिया, ओमान, कतर, सऊदी अरब, दक्षिण सूडान, सूडान,सीरिया, थाईलैंड, संयुक्त अरब अमीरात और यमन) में जाने वाले भारतीयों के लिए रोजगार के संबंध में डेटा जमा करता है। ईसीआर देशों में जाने वाले श्रमिक उत्पीड़न ,शोषण और दुरुपयोग के मामलों में महिलाएँ अधिक असुरक्षित पाई गई हैं। इसलिए, ईसीआर देशों में भारतीय महिला का कल्याण और संरक्षण विदेश मंत्रालय के फोकस क्षेत्रों में से एक हैं। भारतीय महिलाएं मुख्य रूप ईसीआर देशों में या तो घरेलू सेवा श्रमिकों (डीएसडब्ल्यू) या नर्स के रूप में से कार्यरत हैं। वे यह भी जानते हैं कि महिला घरेलू कामगार हैं और इन देशों में शोषण के लिए विशेष रूप से कमजोर है जहां कल्याणऔर प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा आमतौर पर कमजोर होती है। मानव तस्करी, विशेषकर महिलाओं के संबंध में शिकायते के कई उदाहरण हैं। एक वर्ष में ऐसे 58 मामलों को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को भेजा गया है क्योंकि यह मानव तस्करी की जांच करने वाली अनिवार्य एजेंसी है।

इन कमजोर महिला श्रमिकों की सुरक्षा और सुरक्षा को खतरे में डालने के लिए एजेंट पर्यटक वीजा ईसीएनआर के मार्ग का उपयोग करते हैं।अपने प्रयास में, इन 18 ईसीआर देशों के कांसुलर सेक्शन से वे मौन सहायता प्राप्त करने में भी सफल रहे हैं। इस स्थिति ने दोहरे वीजा के अजीब उपयोग को चलायमान बनाया है। भारत से प्रस्थान करते समय, प्रवासी श्रमिकों को उनके पर्यटक वीजा पर प्रवासियों के अधिकारियों द्वारा और गंतव्य पर उनके आगमन पर मुहर लगाई जाती है। रोजगार के उद्देश्य से वहां पहुंचने से पहले वे अपने पड़ोसी देश के रोजगार वीजा को चिपकाते हैं। हालाँकि, जब उन्हें उनके नियोक्ताओं द्वारा किसी भी शोषण या दुर्व्यवहार, उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है तब वे कहीं जा नहीं सकते और किसी मदद की आशा भी नहीं कर सकते।

इन विषम परिस्थियों से उभारने के लिए भारत सरकार कई स्कीम चला रही है जैसे कि संयुक्त कार्य समूह जिसका उद्देश्य है श्रम और जनशक्ति के तहत संयुक्त कार्य समूह की स्थापना और सहयोग समझौता ज्ञापन ६ समझौते श्रम कल्याण की समीक्षा करने के लिए और और रोजगार से संबंधित मुद्दे के लिए एक तंत्र प्रदान करना। इसके अलावा,श्रम और जनशक्ति अधिकारियों के साथ भारतीय मिशनों, पोस्ट्स के बीच नियमित सहयोग है। इस तरह से **MADAD Portal] e&Migrate]Indian Community Welfare Fund (ICWF) Overseas Workers Resource Centre (OWRC)]Migrant Resource Centres (MRCs), Indian Workers Resource Centre (IWRC), PravasiBharatiyaBimaYojana (PBBY)** आदि सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं। Shelter for Female Workers स्कीम के तहत आश्रय गृह कल्याण के लिए स्थापित किए गए हैं जहाँ आश्रय (बोर्डिंग और लॉज) प्रदान किया जाता है, पलायन के मुद्दे को निपटाने ,गृह क्लेश संकट को निपटाने , चिकित्सा उपचार, स्वदेश वापसी की व्यवस्था की जाती है।संकट में फंसी महिला कार्यकर्ता इन से संपर्क कर सकती हैं और तदैव भारत को प्रत्यावर्तित किए जाने तक सभी सुविधाएं प्रदान की जाती है। सरकार की इन कोशिशों की सराहना अवश्य होनी चाहिए। लेकिन ये सुवधाएं केवल उन तक सीमित हैं जिन देशों में इनके रिकार्ड्स मौजूद है या जो जो देश हमारे साथ दोस्ती और सहयोग की अपेक्षा रखते है। कई मामलों में समस्याएँ दो से तीन देशों के बीच का हो जाता है जहां सभी संलग्न देशों से समन्वय करना एक दुरूह कार्य होता है। कितनी ही महिलाएँ मानसिक प्रताड़नाओं, दैहिक व्याभिचार और शारीरिक रूप से शोषित करके मार दी जाती हैं जिनके सम्बन्ध में पर्याप्त डेटा नहीं होता और जिसके एवज में उनके परिवार जन देश और विदेश दोनों जगह असाहय महसूस करते हैं। इस महिलाओं की सशक्तिकरण का रास्ता शैक्षणिक एवं आर्थिक प्रगतिवाद के माध्यम से ही निकल पाएगा। कोई ऐसी व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए जिससे हर वक्त उनके स्थिति की सही जानकारी मिलती रहे ताकि उन्हें किसी भी विषम परिस्थिति से निकाला जा सके। एक महिला जो विदेश में काम करती है हमारे देश को पहचान देती है एवं देश की पहचान अक्षुण्ण रखने हेतु इनकी सुरक्षा किसी भी सरकार की नीतियों में प्रथम पंक्तियों में दर्ज की जानी चाहिए।

सलिल सरोज

स्वामी, मुद्रक प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस रीडसाहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45 बादशाहबाग जगन्नाथपुर से प्रकाशित।
सम्पादक : पंकज धर द्विवेदी
ई–मेल – ghoonghatkibagawat@gmail.com

वैधानिक चेतावनी :

यद्यपि इस अंक में प्रकाशित समाचारों/अग्रलेखों कविताओं आदि का संकलन करते हुए इस बात का पूरा ख्याल रखा गया है कि वे पठनीय, सुस्पष्ट, सुग्राह्य, हों। द्वितीयतः उनके प्रस्तुतिकरण को भाषीय, व्याकरणीय, आदि दृष्टियों से भी त्रुटिहीन रखने का पूरा प्रयास किया गया है। बावजूद इसके प्रूफिंग, संकलन, संपादन, मुद्रण एवं प्रकाशन में किसी प्रकार की कोई त्रुटि आपके दृष्टिपथ में उभरकर आती है, आशा है सुधी पाठकगण, क्षमा करते हुए उसे रेखांकित कर हमारे सम्पादकीय विभाग, (45, बादशाहबाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर) अथवा समाचार पत्र के ई–मेल पर प्रेषित करेंगे जिससे उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति न हो।

इसके अतिरिक्त हमारे विद्वतजन जो सम्पादकीय विभाग में सेवारत हैं, वे सामग्री की मांग के अनुसार आवश्यक फेरबदल करते रहते हैं। ऐसे में आपका यह भी दायित्व होता है कि विभागीय सहयोगियों के दायित्वों का स्मरण भी यथा–समय दिलाते रहना पाठकों की जागरूकता का द्योतक है। आपकी जागरूकता हमारा संबल है।

- त्रुटियों को मानवीय स्वभाव के अन्तर्गत माना जाता है। इसके लिए स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अथवा सम्पादक जिम्मेदार नहीं होंगे। इस अंक में प्रकाशित समाचारों के लिए उत्तरदायी सूचना प्रदाता होंगे।
- प्रत्येक विवाद का निस्तारण स्थल न्यायालय गोरखपुर होगा।